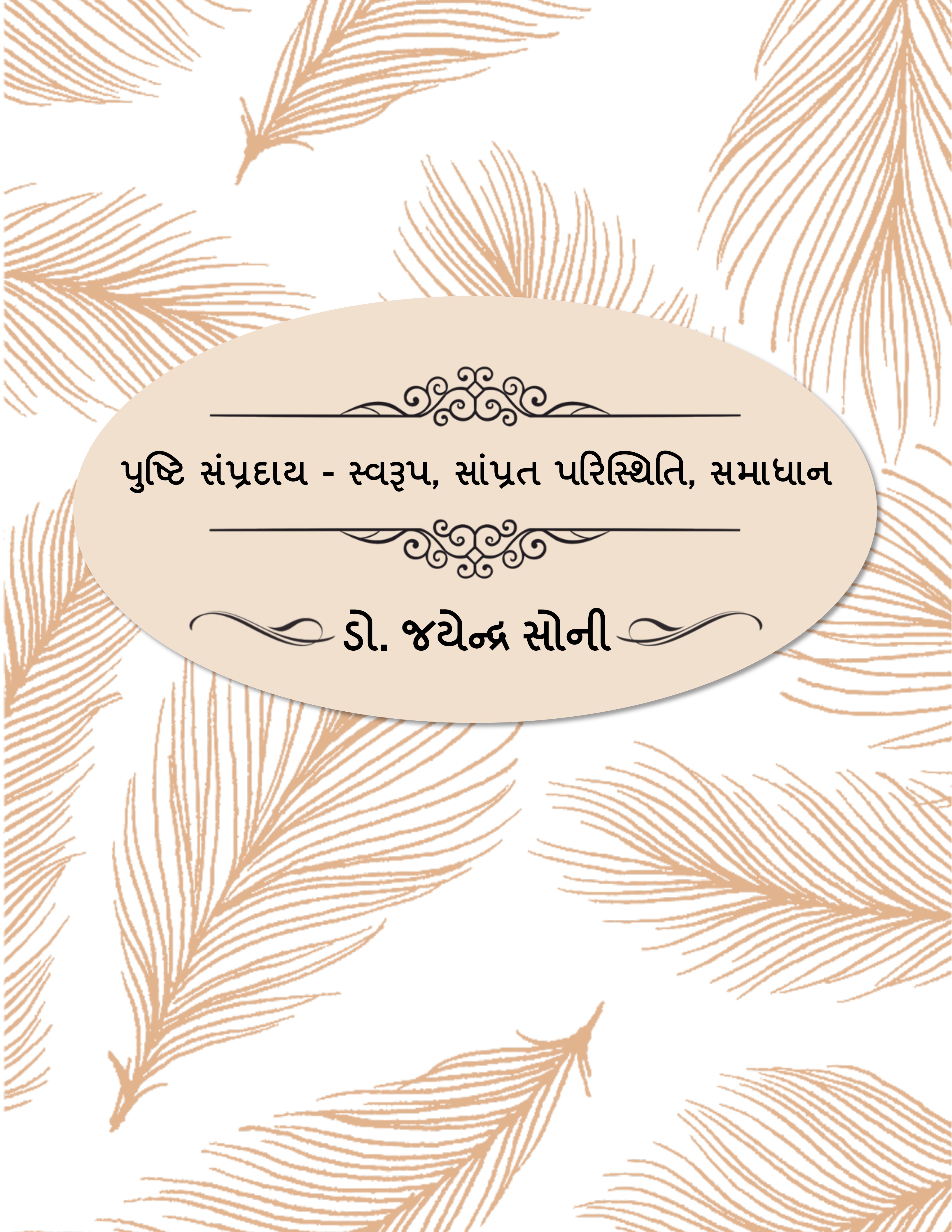

પુષ્ટિ સંપ્રદાય - સ્વરૂપ, સાંપ્રત પરિસ્થિતિ, સમાધાન

ડો. જયેન્દ્ર સોની

પુષ્ટિ સંપ્રદાય - સ્વરૂપ, સાંપ્રત પરિસ્થિતિ, સમાધાન

(*"પુષ્ટિ સંપ્રદાય - સ્વરૂપ, સાંપ્રત પરિસ્થિતિ, સમાધાન"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

शिक्षासागर, आजना उत्सव नायकथी शिक्षा ग्रहण करीए
एक विशेष चिंतन -
"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत परिस्थति, समाधान"
***************** (१) ******************

वर्तमान मा पुष्टिमार्गीय अनुयायीओ मा एवी भ्रमणा प्रवर्ते छे के 'पुष्टिमार्ग' एक 'भक्तिमार्ग' छे, तदर्थ तेमां 'ज्ञान' नी कोई ज आवश्यकता नथी. तेथी, मात्र 'भक्ति' ना नामथी जे प्रकारना विविध मनोरथो, भागवत-सप्ताहो-विभिन्न चरित्र कथाओ इत्यादि जे विभिन्न जाहेर कार्यक्रमो आयोजित करवामां आवे छे, तेमां सम्मिलित थवाथी, तेमां (वित्तजा सेवा ना नामथी) आर्थिक योगदान आपवाथी अथवा हवेलीमां दर्शन - भेट करवाथी, के कथा / प्रवचन श्रवण करवाथी श्रीमहाप्रभुजी द्वारा निर्दिष्ट 'पुष्टिभक्ति' सिद्ध थई जाय छे, अने तेना द्वारा पुष्टिफल रूप भगवद-प्राप्ति थई शके छे.

जो आपणे साचा अर्थमा 'पुष्टिमार्गीय वैष्णव' छीए, श्रीमहाप्रभुजीने आपणा गुरु तरीके स्वीकार्या छे, अने पुष्टिमार्ग ने अपनावी कोई विशिष्ठ फलप्राप्ति नी अपेक्षा सेवीए छीए, तो आ विशे गंभीरतापूर्वक विचार करवानी आवश्यकता छे.

ज़रा शांति थी विचारिए !

श्रीमहाप्रभुजी नो अंतिम ग्रंथ छे - "शिक्षाश्लोकी", जेना द्वारा आपश्रीए अंतिम उपदेश रुपे पोतांना पुत्रो / शिष्योंने 'शिक्षण - ज्ञान' आप्यु छे. तेवीज रीते शिक्षासागर एवा श्रीहरिरायजी नो विशिष्ट ग्रन्थ छे - "शिक्षापत्र", जेना द्वारा आपे पोतांना लघु भ्राता ना निमित्त थी पुष्टिमार्ग ने अनुसरवा इच्छता वल्लभीयजनोने तद्विषयक सिद्धांतो समजावी 'ज्ञान' आप्यु छे. श्रीगुसाइजीए पण "सेवाशिक्षा" ग्रंथ द्वारा सेवा विषयक 'शिक्षण' ज आप्यु छे. दशदिगंतविजयी श्रीपुरुषोत्तमजीए नव लाख श्लोकों ना विपुल साहित्य नी रचना करी होवानुं कहेवाय छे, जेनो आशय श्री महाप्रभुजीना ग्रंथो ने विस्तार थी समजाववानो छे, तेथी तेंनु 'ज्ञान' आवश्यक छे. स्वयं श्रीमहाप्रभुजीए समग्र शास्रो नुं दोहन करी अनेक प्रकीर्ण ग्रंथो द्वारा पोतांना सिद्धांतो समजाव्या छे. स्वाभावीक छे के ए ग्रंथो नी रचनानो आशय आ मार्गने अनुसारनारा अनुयायीओं ने संप्रदाय नुं ज्ञान आपवा सिवाय अन्य शुं होइ शके ?

मोटा भागना पुष्टिमार्गीय वैष्णवो एम मानता होय छे के घरमां यथासंभव मिश्रीभोगनी नैमित्तिक (token) सेवा करवाथी अथवा सार्वजनिक मंदिरो (हवेली) मां भेट धरी आर्थिक योगदान द्वारा वित्तजा सेवा करवाथी श्रीमहाप्रभुजी द्वारा उपदेशित 'कृष्णसेवा' नी आज्ञानु पालन थई जाय छे, अने एज 'पुष्टिभक्ति' छे.

परंतु आ मान्यता भुलभरेली छे, गेरमार्गे दोरनारी छे. जे कोई आ प्रकार नो उपदेश आपे छे तेओ हकीकत मां अनुयायीओने भ्रमित करी रह्या छे, कारणके स्वयं श्री महाप्रभुजी स्पष्टपणे निबंन्ध ग्रंथ मां खुलासो करे छे के "शास्त्रोंने (आपश्रीना ग्रंथोने) सारी रीते जाणीने मन-वचन-देहथी कृष्णसेवा करवी जोइए" (शास्त्रार्थ प्रकरण). अर्थात कृष्णसेवा करवा माटे शास्त्रो / ग्रंथो नुं ज्ञान होवु अनिवार्य छे.

श्री महाप्रभुजीए 'पुष्टिभक्तिमार्ग' नुं प्रवर्तन कर्यु छे नही के मात्र 'सेवामार्ग' नुं. आपश्रीए 'भक्ति' नी व्याख्या आपी छे - "भगवान ना माहात्म्यज्ञान पूर्वक तेमनामां सुदृढ़, सर्वतोधिक स्नेह होवो तेने भक्ति कहेवाय" (शास्त्रार्थ निबंन्ध) - अर्थात भक्तिना बे आवश्यक अंग बताव्या छे - 'भगवान नुं माहात्म्यज्ञान' अने 'तेमना प्रत्ये प्रेम'. आपश्री समजावे छे के "....ज्ञान सहित प्रेमवडे श्रवणादि साधनथी जो भगवानने भजवामा आवे तो ते भक्तिमार्ग मां उत्तम छे. शास्त्र ज्ञान ना अभाव मां प्रेमथी पण भजन करे तो ते मध्यम छे, उत्कट प्रेम न होय तो ते हीन छे, प्रेम अने ज्ञान बन्ने न होय तो श्रवणादि पापनाशक छे पण तेने 'भक्ति' कही शकाय नही" (शा.प्र. प्रकाश का.१०१-१०२).

आथी समजी शकाय छे के 'ज्ञान' ए 'भक्ति' नी पूर्वाश्यकता छे.

क्रमशः......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप,सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

***************** (२) ******************

जो पुष्टि संप्रदाय ना सिद्धांतो नी साची समज वीना मात्र देखादेखी, विना सोचे-समजे, आ मार्ग नुं अनुसरण करवा मां आवे तो ते मात्र अंधानुकरण (blind following) कहेवाय, जेनु यथार्थ निर्देशन परम विदुषी नि. ली. पु. गो. श्री इंदिराबेटीजी महोदयाश्रीए थोड़ा वर्ष पूर्वे एक जाहेर प्रवचन मां कर्यु हतु.

आपे कहेलूं के -"लोको एक घेटा नी पाछळ बीजु जाय, बीजा नी पाछळ त्रिजुं जाय, एम घेटानी माफक बधा चाली रह्या छे, क्यां जवाना छे, शुं करवाना छे, खरेखर श्रीमहाप्रभुजीना मार्ग पर चाली रह्या छे के जुदा ज रस्ते दोड़ी रह्या छे, कोईने खबर नथी." आम कही आपश्रीए प्रश्न कर्यो हतो - "खरेखर अर्थमां शुं आपणे पुष्टिमार्ग ना फ़ॉलोअर्स छीए ? Are we following पुष्टिमार्ग or something else ?". (जन्मभूमि, मुम्बई, ता. ६-११-२०१२).

केटलूं वास्तविक अवलोकन छे आपश्रीनुं ! हकीकत मा वर्तमानमां प्रवर्ति रहेल पुष्टि संप्रदाय नुं आ स्वरूप छे.

अन्य प्रत्येक सम्प्रदायो मां अनुयायी वर्ग ने जे ते धर्मो ना धर्म गुरुओं पोतांना अनुयायीओ ने धर्म / संप्रदाय विषयक पद्धतिसर नुं शिक्षण / ज्ञान आपे छे, अथवा तद्विषयक शिक्षण आपवानी सुयोग्य सुव्यवस्था करवा मां आवेली होय छे. संप्रदाय ने अनुसरण करनारा पण पोतानी आस्था मुजब ज्ञान प्राप्ति करवी आवश्यक समझता होय छे, जेथी तेओ पोतांना धर्म नु सारीरीते पालन करी शके.

परंतु 'पुष्टि संप्रदाय' मां मोटाभागे परंपरानुगत अथवा देखादेखी अनुकरण करवा नी प्रणाली प्रचलित छे, सुव्यवथित प्रशिक्षण ना आयोजन नो अभाव छे, जेना कारणे अनुयायी वर्ग ने पायानुं साचु सैद्धांतिक ज्ञान उपलब्ध थतु नथी. ब्रह्मसंबंध नी दीक्षा आप्या पहेला के पछी भाग्येज दीक्षादाताने तेना गाम्भीर्य विशे बोध आपवामां आवेछे, के तेना कर्तव्य विशे जणाववामां आवे छे. दीक्षा लेनार ने तेना तात्पर्य

नी वास्तविक समज शायद ज होय छे.

ए साचु छे के धर्म श्रद्धा नो विषय छे, परंतु मुलभूत ज्ञान ना अभाव मां ते मात्र 'अंधश्रद्धा' बनीने रही जाय छे. तेना अनेक दुष्परिणाम आवी शके छे, जे आपणे वर्तमान मा घटती घटनाओ थी समजी शकीये छीए. कहेवाता गुरुओ निजी स्वार्थवश कौभांडों करता होय छे. श्रीमहाप्रभुजी तेथीज आज्ञा करे छे - "पाखंड प्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम".(कृष्णाश्रय).

कोईपण धर्म के संप्रदाय नुं अनुसरण स्वार्थपूर्ति, अन्य प्रयोजन के आडंबर रुप होइ शकतु नथी, परंतु तेनो हेतु जीवन नो उत्कर्ष करवा नो होय छे. कोई चाहे 'कर्ममार्ग' ने अनुसरतो होय के 'ज्ञान मार्ग' ने अथवा कोई अन्य प्रकारनी उपासना / आराधना के भक्ति करतो होय, तेनो हेतु अलौकिक - मोक्षादि फलप्राप्ति / भगवद साक्षात्कार नो होय छे. तेनो हेतु लौकिक फल प्राप्ति होई शके नहीं. प्रत्येक धर्म नो हेतु जीवन नो आध्यात्मिक उत्कर्ष ज होय छे.

तेवीज रीते 'पुष्टिभक्ति' नो हेतु पण स्पष्टतया 'भगवद प्राप्ति' छे, "भगवानेव फलम", आचार्य श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करे छे (पु. प्र. म.भेद). ते फलप्राप्ति माटे अपनावेली साधना प्रणाली मां / पोताना आचरणमा आपणी संपूर्ण निष्ठा होवी आवश्यक छे. स्वयं श्रीमहाप्रभुजी कहे छे के "निष्ठाना अभावमां कोईपण जातनुं फल मळतुं नथी. निष्ठा मात्र वातोथी के तरंगों थी नहीं परंतु शास्त्रोना साधनो थी प्रकट थवी जोईए" (निबंध- शा.प्र. १८) क्रमशः......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

***************** (३) *******************

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छेके भगवाने आ सृष्टिनी रचना निज लीलार्थ करी छे. तदर्थ तेमां पुष्टि, प्रवाह, मर्यादा तेमज मिश्र प्रकृतिवाळा विभिन्न जीवो प्रकट कर्या छे, जेमनी रुचि, अधिकार अने फल जुदा जुदा छे. तेथी प्रत्येक जीव नी प्रवृत्ति, आस्था भिन्न भिन्न होवी स्वाभाविक छे. बधाज जीवो पुष्टिमार्गीय होइ शकता नथी. सर्व नुं गंतव्य समान होइ शकतुं नथी. केटलाक प्रवाही / मर्यादा जीवो पण विशिष्ठ संयोगोना कारणे पुष्टिमार्गनी धारामां आवी शके छे, जेओ विना लगाव के निष्ठा पुष्टिमार्गीय गतिविधिओनु देखादेखी अनुसरण करता होय छे.

आ चिंतन तेवां जीवोना सन्दर्भ मां नथी, केमके जेमनु वरण भगवाने प्रवाही के मर्यादा जीवो तरीके कर्यु छे, तेमां प्रवाही जीवोने तो तेमना अधिकार मुजब कोई धार्मिक आस्था न पण होय, अने मर्यादा जीवो नी रूचि विभिन्न देवी- देवताओनी उपासनामां के अन्य धार्मिक उपक्रमोमा होई शके छे, तदर्थ पुष्टिमार्गना नामे पण तेवी प्रवृत्ति थती होय, तेनी आलोचना करवानुं पण प्रयोजन नथी.

परंतु जे जीवो नुं वरण भगवाने पुष्टिजीव तरीके कर्यु होय अने जेओ सभानपणे पोताने पुष्टिमार्गीय होवानुं मानी, पुष्टिमार्ग नुं अनुसरण करी श्रीमहाप्रभुजी द्वारा निर्दिष्ठ भक्तिपथ पर अग्रेसर थई पुष्टिभक्ति करवा अने तेना थकी भगवद-प्राप्ति नु ध्येय धरावे छे, तेवा सौ वल्लभीयजनोए पुष्टिमार्ग नुं यथार्थ स्वरूप जाणवु जोइए अने वर्तमान परिस्थिति मा पुष्टिसंप्रदाय नुं जे स्वरूप दृष्टिगोचर थाय छे, तद्विविषयक गंभीरतापूर्वक विचार करवो अत्यावश्यक छे. तेज आ चर्चा नो हेतु छे.

आ आलेख द्वारा नतो कोई व्यक्तिविशेष नी, आचार्यश्रीनी के कोई प्रणाली नी आलोचना के टिका

करवानुं प्रयोजन छे, न कोई ना विशिष्ट विचारोने प्रस्तुत करवानो उद्देश्य छे. हेतु मात्र वर्तमान मां पुष्टिसंप्रदाय मा दृष्टिगोचर थई रहेल विसंगतिओ पर सुज्ञ वांचको नुं ध्यानाकर्षित करवानो छे, कारणके मने श्रीमदाचार्यचरण मां, आपश्रीना तत्त्वदर्शीय तेमज धर्मदर्शीय सिद्धांतो मा संपूर्ण श्रद्धा / निष्ठा छे. मारुं मंतव्य छे के साडा पांच सदीयो थी अक्षुण्ण रहेलां आ दिव्य संप्रदाय नी गरिमा यथावत जळवाई रहे ते जोवानुं उत्तरदायित्व "श्रीवल्लभ" जेमने वल्लभ छे, तेवी समस्त वल्लभीय सृष्टि नुं छे. हुं पण ए वल्लभीयसृष्टि ना अभिन्न अंग एवा नादसृष्टिनो अंश छु, अने तदर्थ आ संप्रदायने श्रीमहाप्रभजी नी एवम मारा दीक्षादाता गुरु / अन्य वल्लभकुल आचार्योनी कृपाथी हुं जे रीते समज्यो छुं, तेने अभिव्यक्त करवा नुं मारुं कर्तव्य समजु छे, जेने विनम्रभावे सदैन्य अत्रे प्रस्तुत करु छु. क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय नुं स्वरुप, सांप्रत परिस्थिति, समाधन"

***************** (४)*****************

* पुष्टिसंप्रदाय नी आधारशिला *

आठमी शताब्दिमां प्रादुर्भूत आदि-शंकराचार्यजीए करेली वेदांन्त नी व्याख्याना आधारे, तत्कालीन प्रवर्तित शून्यवाद नुं निरसन करी, मनुष्यजीवन ना उत्कर्ष माटे तेमणे प्रतिपादित ज्ञानमूलक 'केवलाद्वैत' नी दार्शनिक विचारधारा पछी नवमी शताब्दीथी समग्र भारतमा विविध 'भक्ति सम्प्रदायो' अस्तित्वमां आव्या हतां. ए सम्प्रदायो द्वारा 'मोक्षप्राप्ति' अथवा 'भगवद साक्षात्कार' माटे ज्ञान ना विकल्प रुपे 'भक्ति' नी विशिष्ठता ने उजागर करी, विषेशतः 'कृष्ण भक्ति' नो व्यापक प्रचार थयो हतो.

अगियारमी शताब्दीमां श्रीरामानुजाचार्ये 'विशिष्टादैत वाद' नी दार्शनिक विचारधारा प्रतिपादित करी, तदन्तर्गत 'श्री संप्रदाय' स्थाप्यो अने वेदादि शास्त्रोमा वर्णित उपासना ने 'भक्ति' स्वरूपे प्रवर्तित करी तेनो बहोळो प्रचार कर्यो. दक्षिण मा थई गयेलां 'आलवार संतो' आनुं प्रमाण छे.

ते पछी तेमना अनुगामी आचार्यो द्वारा बीजा त्रण 'भक्ति सप्रदायों' स्थपाया छे. बारमी शताब्दीमां श्रीमध्वाचार्य द्वारा 'ब्रह्म सम्प्रदाय', श्री निम्बार्काचार्य द्वारा 'सनक संप्रदाय' अने श्री विष्णुस्वामी द्वारा 'रूद्र संप्रदाय'. ए त्रणेय सम्प्रदायो मा विशेषतः कोइक रुपे कृष्णभक्ति नुं प्राधान्य हतु .

प्रत्येक आचार्योए वेदादि शास्रो पर आधारित, ब्रह्मसूत्रों पर स्वतंत्रपणे भाष्य नी रचना करी, पोतांना दार्शनिक सिद्धान्तों ना आधारे 'जीव, जगत, जगदीश ना स्वरूप ने समजाव्या छे, तेमज 'परम तत्त्व'ने पामवा माटे विभिन्न साधना प्रणालिओ प्रवर्तित करी छे.

तत्पश्चात पंदरमी शताब्दी मां श्रीकृष्ण ना मुखार्विन्द स्वरुप श्रीवल्लभाचार्यजी नो प्रादुर्भाव थयो, जेमणे विष्णुस्वामी द्वारा प्रवर्तित रूद्र संप्रदाय नी परंपरा अंतर्गत, ब्रह्मसूत्रों पर पोतानु स्वतंत्र भाष्य - 'अणुभाष्य' रची वेद, गीता, ब्रह्मसूत्रों अने भागवत, ए 'प्रमाणचतुष्टय' नी एकवक्यताना आधारे 'शुद्धाद्वैत वाद' नी दार्शनिक विचारधारा प्रतिपादित करी, तदन्तर्गत अन्य पुरोगामी आचार्योए प्रवर्तित करेली शास्त्रोक्त भक्ति - ' विहिता भक्ति' थी विलक्षण 'प्रेम लक्षणा भक्ति' ना विशिष्ठ संप्रदाय नुं प्रवर्तन कर्यु छे जे "पुष्टि संप्रदाय" अथवा "वल्लभ संप्रदाय" ना नामथी जाणीतो छे. क्रमशः ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

*****************(५)******************

पुष्टि संप्रदायनी आधारशिला (चालू)

'पुष्टि' शब्द नो अर्थ छे - 'कृपा'. भगवान नी प्राप्ति माटे स्वयं तेमनी कृपा ज जे संप्रदाय नुं अवलंबन छे, ते 'पुष्टि संप्रदाय'. कठोपनिषद मां विधान छे - "नायमात्मा प्रवचनेंन लभ्य, न मेधया, न बहुना श्रुतेन. यमे वैश वृणुते तेन लभ्य", अर्थात परमात्मा नतो प्रवचनों थी प्राप्त थाय छे, न बुद्धिथी, के न घणी कथाओ ना श्रवण मात्रथी, परंतु परमात्मा स्वयं जेनु वरण करे एटलेके जेना पर पोतानी कृपा वरसावे तेने मले. उपनिषद नुं आ वचन श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रवर्तित 'पुष्टि संप्रदाय' नो मूलाधार छे.

आ सप्रदाय नी 'साधना प्रणाली' सारस्वत कल्पमा कृष्णावतार समये व्रज नी गोपीकाओए जे रीते निर्गुण भक्ति द्वारा भगवान श्रीकृष्णने प्राप्त कर्या हतां, जे मार्ग पर चाली तेओ भगवान नी अहेतुकी कृपा ना अधिकारी बन्या हता, ते 'पुष्टिमार्ग' पर आधारित छे. तदर्थ श्रीवल्लभाचर्यजी गोपीजनोने पुष्टिमार्ग ना 'गुरु' बतावे छे'. "कौंडिन्यो गोपिका प्रोक्ता गुरवः" (सं.निर्णय -८).आ मार्ग नो मूलमंत्र छे -"सेवा रीत प्रीत व्रजजनकी". जे प्रकारे प्रीतिपूर्वक नी सेवा थी व्रजभक्तोए प्रभूने रिझव्या हता ते रीत पुष्टि संप्रदाय नी आधारशिला छे. गोपीजनोना जेवो प्रभुमां निष्काम प्रेम होवो ए आ संप्रदाय ना अनुसरण माटेनी मुलभुत आवश्यकता छे. आ संप्रदाय नो आचार छे - "सगुण - साकार स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण नी निर्गुण भक्ति, तेमनी बिनशर्ती संपूर्ण शरणागति स्वीकारी अनन्यता पूर्वकनुं समर्पित जीवन".

श्रीवल्लभाचार्यजीए पोतांना 'कृष्णाश्रय' ग्रंथ मां कह्यु छे तेम कलियुगमां भगवद प्राप्तिना शास्त्रोक्त विबिन्न मार्गो कारगत निवड़े तेम नथी रह्या, कारणके ते माटे आवश्यक षड अंगों - देश, काल, द्रव्य, कर्ता, कर्म, मन्त्र शुद्ध रहया नथी, सर्वत्र पाखंड नुं साम्राज्य प्रसरेलूं छे, लोको पापासक्त थयेला छे, तीर्थस्थानों पण दूषित थयेला छे, एवी विषम परिस्थिति मा मात्र 'श्रीकृष्ण' ना अनन्य आश्रयथी ज मनुष्य नुं उत्कर्ष थई शके छे, ते परम गतिने प्राप्त करी शके छे.

तदर्थ, स्वयं भगवान नी इच्छा थीज दैवीजीवोना उद्धारार्थे साडा पाँचसो वर्ष पूर्वे महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी नुं भूतल पर प्राकट्य थयूं हतुं.

क्रमशः......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

****************** (६) ******************

पुष्टि संप्रदाय ना प्रस्थापक - प्रवर्तक

श्रीमहाप्रभुजी ना द्वितिय आत्मज प्रभुचरण श्री गुसांईजी श्रीसर्वोत्तम स्तोत्रमां समजावे छे - "दयया निज महात्म्यम कारिष्यं प्रकटम् हरिः, वाण्या यदा तदा स्वास्य, प्रादुरभुतं चकार हि", अर्थात 'स्वयं

भगवाने पोतानी इच्छाथी ज पोताना माहात्म्यने वाणी द्‌वारा प्रकट करवा माटे पोतांना मुखारविंदने श्रीमहाप्रभुजी स्वरूपे प्रकट कर्या छे'..(सर्वोत्तमजी - ३).

तदनुसार भागवद वदनावतार श्रीमहाप्रभुजीए अनेक जन्मोथी भटकी रहेला दैवीजीवो नो उद्‌धार करवा, शास्त्रोक्त भक्तिमार्ग - मर्यादामार्ग थी भिन्न, 'प्रेमलक्षणा भक्ति' नो, 'पृथक शरणमार्ग' 'पुष्टि संप्रदाय' ना नामे प्रस्थापित - प्रवर्तित कर्यो छे. तदन्तर्गत तेमणे उपदेशेली साधना प्रणाली 'पुष्टि भक्तिमार्ग' कहेवाय छे. पुष्टि भक्तिमार्ग नो आधार तेमनी दार्शनिक विचारधारा 'शुद्‌धाद्‌वैत ब्रह्मवाद' (अखंड ब्रह्मवाद) छे. अर्थात 'शुद्‌धाद्‌वैत ब्रह्मवाद' श्रीमहाप्रभुजी नो 'विचार पक्ष' छे, ज्यारे 'पुष्टि भक्तिमार्ग' तेमनो 'आचार पक्ष' छे. ते बन्ने परस्पराश्रित छे. तेथी ते बन्ने जाणवा, समजवा, अने आचरण मां मुकवा जरुरी छे.

माटेज पुष्टि संप्रदाय ना मूर्धन्य आचार्य पु. गो. श्रीश्याममनोहरजी महाराजश्री लखे छे - "साकार ब्रह्मवाद के बिना हमारी पुष्टिभक्ति के अंधश्रद्‌धा में बदल जाने की संभावना है, तथा पुष्टिभक्ति के बिना साकार ब्रह्मवादी दृष्टि हमारे पंगु विश्वास की द्‌योतक होगी. अतः आवश्यकता है पुष्टिभक्ति के मार्ग पर साकार ब्रह्मवादी दृष्टि से संपन्न होकर चलने की".(साकार ब्रह्मवाद - पे.१९).

श्रीवल्लभाचार्यजीना दार्शनिक सिद्‌धांतो मनघडंत नथी परंतु भगवद शास्रो ना ठोस आधार रुप शब्द प्रमाणो ना नी एकवाक्यता पर घडवामां जाव्या होवानी स्पष्टता करतां तेमणे पोताना निबंन्ध ग्रन्थ ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां कह्यु छे - "वेदाः श्रीकृष्ण वाक्यानि व्याससूत्राणि चैवहि, समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयं"., अर्थात -समग्र वेद, गीता, ब्रह्मसूत्रों अने श्रीमद भागवत ना वचनो नी एकवाक्यताना आधारे तेमणे पोताना सिद्‌धांतो आ ग्रन्थ मां आलेख्या छे. तेमां श्री महाप्रभुजीए जीव-जगत-जगदीश नी तत्त्वदर्शीय वास्तविकता समजावी पुष्टिजीव ना उत्कर्ष माटे साधन अने फल नी मीमांसा प्रस्तुत करी छे. तदुपरान्त षोडशग्रंथो' नामे प्रसिद्‌ध सोळ लघु ग्रंथो मां तेमणे आ संप्रदाय ना अनुयायीने पुष्टिपथ पर चालवा माटे मूलभूत पायारुप बाबतो - भक्ति, शरणागति, समर्पण अने सेवा ना सिद्‌धान्तोनी विस्तारपूर्वक समज आपी छे. तद्‌विषयक सिद्‌धांतों जाणवा, समजवा अने तेंनु अनुसरण करवुं पुष्टिभक्तिमार्ग ना पथिक माटे अनिवार्य छे. क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

*******************(७) ******************

संप्रदाय ना प्रस्थापक- प्रवर्तक (चालू)

श्रीवल्लभाचार्यजी ना द्‌वितीय पुत्र भगवद स्वरूप श्रीगुसाइंजी श्री विठ्ठलनाथजीए पण पोताजा पितृचरण नी विचारधाराने अनुमोदित करता अनेक ग्रं 'पुष्टि भक्तिमार्ग' ना दार्शनिक पक्षने समजाववा 'विद्‌वनमंडन' आदि ग्रंथो नी रचना करी छे. तेमणे आ संप्रदाय नी साधनाप्रणाली नो अनेकविध विस्तार करी तद्‌विषयक तेना हार्द ने भक्तिहंस, भक्तिहेतु निर्णयः सेवाशिक्षा आदि ग्रंथो द्‌वारा समजाव्या छे. तदर्थ तेमने पुष्टि संप्रदाय ना 'सह-संस्थापक' मानावामां आवे छे.

तेमना पछी दिव्य भगवद गुणो थी विभुषित तेमना सात पुत्रो तेमज तेमना विद्‌वान वंशजो - श्री हरिरायजी एवं श्रीपुरुषोत्तमजी जेवा अद्‌वितीय महानुभावोए श्रीमहाप्रभुजी तथा श्रीगुसाइंजी ना

दूर्बोध सिद्धांतोंने सरलताथी समजाववा अनेक टीका - विवृत्ति / वाद ग्रन्थों नी रचना करी छे. तेना द्वारा आ संप्रदाय ना मुलभुत विचारोने आसानिथी समजी शकाय छे.

कोइपण संरदाय ना प्रवर्तन / अनुसरण माटे तेना प्रवर्तक आचार्यो द्वारा चार प्रकारे उपदेश देवो आवश्यक होय छे - १. तत्त्वोपदेश, अर्थात तेना तत्त्वदर्शीय विचारो, २. सिद्धांतोंपदेश, अर्थात शास्त्रीय प्रमाणो ना आधारे घड़ायेला सिद्धान्तों नी समझ, ३. व्यवहारोपदेश, अर्थात ते सिद्धांतो नु व्यवहारमा आचरण केम करवु जोइए तेनो ख़ूलासो, अने ४. फलोपदेश एटले तेसंप्रदाय ना अनुसरण थी थनारी फलप्राप्ति.

श्रीमहाप्रभुजी तेमज तेमना अनुगामी आचार्योए पण पोताना विबिन्न ग्रंथो द्वारा आ चार प्रकारना उपदेश आपवामां आव्या छे जेनाथी संप्रदाय ना अनुयायी वल्लभीय वैष्णवो संप्रदाय नुं यथार्थ रूपमा अनुसरण करी पोतांना गंतव्य ने प्राप्त करी शके. ते माटे अनुयायीगणे आ उपदेशोने ग्रहण करवा माटे आचार्योना विविध ग्रंथो नुं अध्ययन करवुं आवश्यक छे. जो आ ग्रंथो द्वारा साची समझ केळववामां न आवे तो गेरमार्गे दोरवाई जवानी पूरी संभावना छे, विशेषतः वर्तमान युगमां, कारणके स्वयं श्री महाप्रभुजी कहे छे - "पाखण्ड प्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम". क्रमशः......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

****************** (८) ******************

"संप्रदाय ना स्थापक - प्रवर्तक" (चालु)

श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र मां श्री गुसाइंजीए श्रीमहाप्रभुजी नुं एक नाम "गुरु" बताव्यू छे. आ नामनुं तात्पर्य ए छे के श्रीमहाप्रभुजी पोतांना द्वारा प्रवर्तित / उपदिष्ट पुष्टि संप्रदाय नुं फल आपवा माटे सक्षम छे. जेवीरीते श्रीकपिलदेवजी सांख्य दर्शन ना उपदेशक होवाथीज तेना फलदाता हतां, तेथी ते मार्ग ना 'गुरु' हतां, तेम श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिसंप्रदाय ना 'गुरु' छे, कारणके तेओ आ संप्रदाय ना अनुयायीओं ने भागवत-प्राप्ति रूप फलदान करवा नुं सामर्थ्य धरावे छे. तदर्थ दशदिगंतविजयी श्रीपुरुषोत्तमजीए खुलासो कर्यो छे के पुष्टिमार्ग ना समस्त अनुयायीओं ना एक मात्र गुरु श्रीमहाप्रभुजी ज छे,अने समस्त श्रीवल्लभकुल आचार्यो 'गुरुद्वार' छे. गुरुद्वार नुं तात्पर्य छे -तेमना थकी श्रीमहाप्रभुजी वर्त्तमान मां, अनवतार काल मां पण पोतानुं भगवत प्रेरित पुष्टिजीवो ना उद्धार नुं कार्य करी रह्या छे.

तेवीज रीते श्रीसर्वोत्तमजी मां श्रीगुसाइंजीए बीजु एक विशिष्ट नाम आप्यु छे - "स्ववंशे स्थापिताशेष स्वमाहत्म्य:". आ नाम नो अर्थ सर्वोत्तमजीनी विवृत्ति मा समजावता श्रीगुसाइंजी ना चतुर्थ लालाजी श्रीगोकुलनाथजी स्पष्टता करतां कहे छे के आ नाम मां 'वंश' शब्द नो अर्थ 'पुत्र' छे. अर्थात श्रीमहाप्रभुजीए पोतानु अशेष माहात्म्य श्रीगुसाइंजी मा स्थापित कर्यु छे.

आ वात नुं अनुमोदन वार्ता-साहित्य मा पण प्राप्त थाय छे, ज्या श्रीमहाप्रभुजी स्वयं पोतांना प्रिय सेवक दामोदरदास हरसानीजी ने आज्ञा करे छे के श्रीगुसाइंजी पोतानु ज स्वरूप छे. आ प्रमाण थी स्पष्ट थाय छे के श्रीगुसाइंजी मां ज श्रीमहाप्रभुजी नुं माहात्म्य विद्यमान हतुं. श्रीमहाप्रभुजी मां एवु अलौकिक सामर्थ्य छे के पोते अनवतार कालमां पण पोते निजवंश मां बीराजी भगवद आज्ञानुसार वर्त्तमान

मा पुष्टिजीवोने शरणे लइ तेमने ब्रह्मसंबंध करावे छे, अने सेवार्थे भगवद विग्रह पधारवे छे. संप्रदाय विषयक मार्गदर्शन पण आप पोताना विभिन्न ग्रंथो मा वांग्मय स्वरुपे बीराजी आपे छे. अर्थात वर्तमान मां पण श्रीमहाप्रभुजी दैवीजीवो ना उद्धार नुं कार्य परोक्षमां करी रहया छे. ....क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

***************** (९) ******************

"संप्रदायना प्रस्थापक - प्रवर्तक" (चालु)

तदर्थ ज पुष्टि संप्रदाय मां अन्य सम्प्रदायो मां प्रवर्तित 'शिष्य-परंपरा' थी भिन्न 'वंश परंपरा' प्रचलित छे, कारणके संप्रदाय ना मूल प्रवर्तक भगवदावतार श्रीमहाप्रभुजी वर्तमान मां पण पोतेज निज सामार्थ्यथी पोतांना वंशज द्वारा भगवादाज्ञानुसार संप्रदाय ना अनुयायी ने ब्रह्मसंबंध मन्त्र नी दीक्षा आपी आत्मनिवेदन करावे छे, तेमने भगवद स्वरुप पधरावी, 'कृष्णसेवा' मां प्रवृत्त करे छे.

तेथी वर्तमान मां श्रीवल्लभकुल आचार्यश्रीओ द्वारा अपाती अष्टाक्षर के ब्रह्मसंबंध मन्त्र नी दीक्षा तेओ श्रीमहाप्रभुजी नी कानी थी आपे छे, पोताना स्वतन्त्र सामर्थ्य के अधिकार थी नहीं. अर्थात, ते दीक्षाओं वास्तवमां परोक्ष मां स्वयं श्रीमहाप्रभुजी ज पोताना वंशज द्वारा आपे छे. आ हकीकत थी दीक्षादाता आचार्यश्री पण परिचित होय छे, भले तेनी स्पष्ठता करवा मां न आवती होय. आम अनुयायी कोइपण वल्लभकुल आचार्यश्री द्वारा दीक्षा ग्रहण करे, वास्तव मां दीक्षार्थी ना 'गुरु' स्वयं श्रीमहाप्रभुजी ज बने छे. तदर्थ श्री पुरुषोत्तमजी कहे छे तेम दीक्षादाता आचार्यश्री 'गुरुद्वार' गणाय छे, कारणके तेओ ना द्वाराज दीक्षार्थिनो सम्बन्ध गुरु श्रीमहाप्रभुजी साथे थाय छे. तदर्थ ज पुष्टि संप्रदायमां श्रीवल्लभकुल आचार्यो नुं महत्व छे.

अगाउ कहेला पुर्वाचार्यो ना वचनो ना प्रमाणोना आधारे स्पष्टपणे समजी शकाय छे के पुष्टिमार्ग ना गुरु मात्र श्रीवल्लभाचार्यजी ज छे अने तेमना अनावतार काल मा तेओ तेमणे स्थापेला संप्रदाय नुं वहन पोतांना वंशजो ना माध्यम थी करी रहया छे, तदर्थ अनुयायीजनो नो दीक्षादाता वल्लभकुल मां गुरुभाव वल्लभवत होवो आवश्यक छे, नहीके तेमने व्यक्तिगत स्वरूपे गुरु समझवा जोइए. आपणे दीक्षादाता आचार्यश्रीमा श्रीवल्लभ स्वरूप नो भाव राखीनेज तेमना दर्शन - चरणस्पर्श आदि करवा जोइए, जेथी आपणी दृष्टिमां सदाय श्रीमहाप्रभुजीनुं स्वरूप हृदयस्थ थाय अने दीक्षादातामां व्यक्तिगत रुपे गुरु होवानी भ्रमणा न थाय.

ज्यारे कोई पण वल्लभकुल आचार्यश्री द्वारा दीक्षा ग्रहण करवा छतां गुरु पदे श्रीमहाप्रभुजीनेज आपणे स्वीकारिए त्यांरे तेमनाथी दीक्षित थयेली समग्र वैष्णव सृष्टि मात्र "वल्लभीय सृष्टि" ज कहेवाय, बधाय अनुयायी श्रीमहाप्रभुजी ना सेवक ज गणाय, नहीं के विभिन्न आचार्यो ना, अथवा तेमनी भिन्न भिन्न सृष्टि, जेम वर्त्तमान मा कहेवामा आवे छे. आ प्रकारनो वास्तविक दृष्टिकोण केळववो, समग्र पुष्टि संप्रदाय नी अखंडितता अने एकता जाळवी राखवा माटे यथार्थ अभिगम छे. क्रमशः .....
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************** (१०) ***************

"पुष्टि संप्रदाय ना मुलभुत सिद्धान्त"

पुष्टि संप्रदाय ना अनुसरण माटे आवश्यक 'तत्त्वोपदेश - सिद्धांतोंपदेश - व्यवहारोपदेश - फलोपदेश' आपवा माटे तेना स्थापक-प्रवर्तक श्रीमहाप्रभुजीए 'प्रमाण चतूष्टय' - चार शब्दप्रमाणो - वेदो, भगवद गीता, ब्रह्मसूत्रों, अने श्रीमद भागवत, ना आधारे पोतानी दार्शनिक विचारधारा - 'शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद' नुं प्रतिपादन करी तदन्तर्गत 'पुष्टिभक्तिमार्ग' नी साधना प्रणाली नु प्रवर्तन कर्यु छे.

तेमणे स्वीकारेला प्रमाणो नो उल्लेख करतां पोतांना महत्वना ग्रन्थ निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण नी शरुआत मांज आप कहे छे - "वेदाः श्रीकृष्ण वाक्यानि, व्यास सूत्राणि चैव हि; समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयं"

अन्य आचार्यो ना दार्शनिक मंतव्यों मुख्यत्वे प्रथम त्रण शास्रो ना आधारे प्रस्तुत करवा मां आव्या छे, ज्यारे श्रीमहाप्रभजीए भागवत ने चतुर्थ प्रमाण तरीके स्वीकार्यु छे, कारण के ते 'सर्व संदेहवारक' शास्त्र छे. शास्त्रनी वाणी अटपटी होइ मनमा संदेह उत्पन्न थवानी शक्यता रहेली होय छे. तेथी तेमणे खुलासो कर्यो छे के प्रथम प्रमाण मा कोई संदेह उत्पन थाय तो तेनुं निराकारण तेना पछीना शास्त्र थी थई शके छे. भागवत मा तो सर्व बाबतो नुं निस्संदेह स्पष्टीकरण प्राप्त थाय छे.

वळी श्रीमहाप्रभुजीए कोई एक ज शास्त्र नी प्रमाणभूतता पर आधार न राखतां आ चारेय शास्रो नी एकवाक्यता ना आधारे पोताना सिद्धान्तो प्रतिपादित कर्या छे. एज कारण छेके छेल्ला साडा पांचशो वर्ष दरम्यान तेमनी "शुद्धाद्वैत विचारधारा" नुं खंडन कोई अन्य विचारके कर्यु नथी.

तेनाथी विपरीत, सुविख्यात अर्वाचीन तत्त्वचिंतक महर्षि अरविंद घोषे वेदोपनिषद ना स्वतन्त्र अध्ययन द्वारा जे दार्शनिक विचारधारा प्रस्तुत करी छे, ते श्रीमहाप्रभुजी ना शुद्धाद्वैत मत नुं अनुमोदन करे छे. अतः तेमणे करेली आज्ञाओ नी महत्ता समजी शकाय छे. आ बाबत तेमणे प्रवर्तित करेला पुष्टि संप्रदाय ना अनुयायी माटे गर्व लेवा जेवी छे. ....क्रमशः...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** (११) ****************

"पुष्टि संप्रदाय ना मुलभुत सिद्धान्त (चालु)"

श्रीमहाप्रभुजी द्वारा प्रवर्तित 'पुष्टिभक्तिमार्ग' अथवा 'पुष्टिमार्ग' नो आधार, अने तेनी साधना प्रणाली ना मूल मां तेमनी दार्शनिक विचारधारा "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" अथवा "साकार ब्रह्मवाद" छे. अतः ज्यां सुधी तद्विषयक तेमनो 'सिद्धान्त पक्ष' न जाणिये के समजीए, त्यां सुधी आपणीआ दिव्य संप्रदाय नुं अनुसरण करवामां पुरपुरी निष्ठा बनी शकति नथी. तदर्थ ए मुलभुत सिद्धांतोंने समाजवानी आवश्यकता गणाय. श्रीमहाप्रभजीए "कृष्णसेवा सदा कार्या" (सि. मु.) ने पोतानो सिद्धान्त कह्यो छे, तेनी

पाछळ, श्रीकृष्ण ना स्वरूप नी सर्वोपरिता, अने सेवा नी आवश्यकता नुं उंडूं रहस्य रहेलु छे. तेनी पृष्टभूमि मां तेमणे स्वीकारेल शास्रो नी प्रमाणभूतता रहेली छे, जेनी जाणकारी अनुयायिओ माटे महत्वनी छे.

आ कारणे ज स्वयं श्रीमहाप्रभुजी पोतांना निबंन्ध ग्रन्थ ना 'शास्त्रार्थ प्रकरण' नी शरुआत मांज आज्ञा करे छे - "शास्त्रं अवगत्य मनोवाग्देहैः कृष्ण सेव्य". अर्थात शास्त्रोंने सारी रीते समजी ने मन-वचन-देह थी कृष्णसेवा करवी जोईए. आथी समजी शकाय के आपे करेली 'कृष्ण सेवा' नुं रहस्य तेमणे पोताना विभिन्न ग्रंथो मां आलेख्यु छे, जे तेमने स्वीकारेला प्रमाण रूप शास्रो नो निचोड़ छे. आपणे मूल शास्रो - वेदोपनिषद नो अभ्यास भले न करी शकिए, परंतु तेना आधारे आपश्री ए प्रतिपादित करेला सिद्धांतो नी समज तो प्राप्त करी शकिए छीए. आपश्री नी आ आज्ञा संप्रदाय ना प्रत्येक अनुयायी तेमज उपदेशक गुरु माटे पण शिरोधार्य होवी जोइए, कारणके अगाउ कह्यु तेम संप्रदाय ना प्रवर्तन तेमज फलात्मक अनुसरण माटे तत्वोपदेश, तेमज सिद्धांतोंपदेश आदि आपवा नुं दायित्व वर्तमान मा श्रीमहाप्रभुजी ना अनावतार कालमा गुरुद्वार रूप तेमनी बिन्दुसृष्टि - श्रीवल्लभकुल आचार्यो नुं छे.

उपरोक्त "शास्त्रं अवगत्य......" नी आज्ञा श्रीमहाप्रभुजीए पोतानी समग्र सृष्टि - वल्लभीय सृष्टि ने अनुलक्षी ने करेली होइ, तेमना तेमज संप्रदाय ना सह-संस्थास्पक एवा प्रभुचरण श्रीगुसांईंजी अने अन्य पुर्वाचार्यो ना ग्रंथो नुं अध्ययन करवुं ए पुष्टि संप्रदाय ने अनुसरीने भगवद प्राप्ति नी आकांक्षा सेवता प्रत्येक वल्लभीयजन माटे एक अनिवार्य कर्तव्य समजवु जोइए. ....क्रमशः...... (डॉ.जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

*************** (१२) *****************

"पुष्टि संप्रदाय ना मुलभुत सिद्धान्त (चालु)"

अगाउ कह्यु तेम महाप्रभु श्री वल्लाभाचार्यजी ना प्राकट्य पूर्वे पण अन्य भक्ति-संप्रदायों विभिन्न आचार्यो - श्रीरामनुजाचार्य आदि द्वारा प्रवर्तित करवा मां आवेला हतां, अर्थात अस्तित्व मां हतां. ते संप्रदायों मां परब्रह्म परमात्मा नी विविध विभूतिओ नी भक्ति / उपासना करवांनी जुदी जुदी साधना प्रणालिओ नो निर्देश करवामां आवेलो हतो जे शास्र ना वधानो ना आधारे हतो, तेथी तेने 'विहिता भक्ति' कहेवामा आवे छे, अने ते मार्गो ने 'मर्यादाभक्तिमार्ग' तरीके ओळखवामां आवे छे.

मर्यादाभक्तिमार्ग मुख्यत्वे 'सकाम भक्ति' नो प्रकार छे जेमां विविध देवी- देवताओ नी आराधना द्वारा भक्त नी लौकिक तेमज स्वर्गादि सुख प्राप्तिनी अनेक मनोकामना पूर्ण करवा नो अथवा संसार चक्रमांथी मुक्ति - मोक्ष प्राप्ति नाउद्देश्य रहेला छे. श्रीमहाप्रभुजीए पोतांना 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद' नामक ग्रंथमां समजाव्यू छे के भगवाने जे जीवो नुं वरण 'मर्यादा जीव' तरीके कर्यु छे, तेमनी मुक्ति ते विविध संप्रदायों द्वारा प्रवर्तित मर्यादा भक्ति अथवा तद्विषयक घड़ायेली साधना प्रणालीना अनुसरण थी प्राप्त थई शके छे.

परंतु श्रीमहाप्रभुजी ना प्रादुर्भाव नो हेतु कांई जुदोज हतो. भगवाने सृष्टिनी उत्पत्ति समये जे जीवो नुं वरण 'पुष्टिजीव' तरीके कर्यु छे तेमां तेमणे 'पुष्टिभक्ति' नुं बीज रोपित कर्यु होय छे. तेवां जीवोने भगवान पोतानी सेवा द्वारा स्वयं पोतानी प्राप्ति करावती इच्छता होय छे. परंतु एवा पुष्टिजीवो

पण अविद्याग्रस्त थवाथी पोताना साचा स्वरुपने भूली जई हजारो वर्षोथी विभिन्न योनिओमां जन्म-मरण ना चकरावामां भम्या करे छे, तेमना उद्धारार्थे, तेमने तेमना स्वरूप नुं भान करावी पुनः प्रभु साथे जोडवा माटे, स्वयं भगवानेज पोताना मुखार्विन्द स्वरुपने श्रीवल्लभाचार्यजी तरीके अवतरित कर्या होवाना अनेक प्रमाणो प्राप्त थाय छे.

भगवान ना ए उद्देश्य नी पूर्ति माटे श्रीवल्लभाचार्यजीए वेदादि शास्रोना प्रमाणो ना आधारे पोतानी "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" नी दार्शनिक विचारधारा प्रतिप्रादित करी तदन्तर्गत श्रुति वचनो अने गीता-भागवत नी भगवद वाणी ने अनुसरी भगवान नी स्वयं नी कृपा द्वारा भगवत प्राप्ति नो विलक्षण 'प्रेमलक्षणाभक्ति' नो मार्ग - 'पुष्टिभक्तिमार्ग' प्रवर्तित कर्यो छे. आम तेमना द्वारा प्रवर्तित भक्तिमार्ग, नो उद्देश्य स्वयं पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण नी प्राप्ति छे, जेंने माटे तेमणे पोताना सिद्धांतो नुं प्रतिपादन पोतांना विविध ग्रंथोमां आलेख्यु छे, जेना आधारे वर्तमान मां पण तेनु पालन करी पुरुषोत्तमनी प्राप्ति संभव बनी शके छे.

पोतांना जीवनकाल दरम्यान श्रीमहाप्रभुजीए पुष्टिजीवोने शोधी शोधीने पोताने शरणे लइ, तेमनो उद्धार कर्या होवाना प्रमाण इतिहास मा नोंधायेला छे. .... क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिती, समाधान"

**************** (१३) ****************.

"पुष्टिसंप्रदाय ना मुलभुत सिद्धांतो (चालु)"

उपरोक्त भगवद शास्रो ना आधारे श्रीवल्लभाचार्यजीए कलियुग ना जीवो ना उद्धार माटे शात्रोक्त साधनो पर अवलंबित 'विहिता भक्ति' जेंने 'मर्यादा भक्ति' कहे छे, तेनाथी विलक्षण प्रेमलक्षणाभक्ति 'पुष्टिभक्ति' नु प्रतिपादन करी सर्वोच्च 'परम तत्त्व श्रीकृष्ण' नी अनन्य भक्ति नो उपदेश आप्यो छे.

श्रीमहाप्रभुजी नो 'श्रीकृष्ण' प्रत्ये नो पक्षपात कोई संकुचित दृष्टिकोण थी नथी परंतु अर्थ-सभर छे, शास्त्रोक्त विधानों ना आधारे छे. तेमणे निबंन्ध ग्रथ नी शरुआत मांज खुलासो करी ब्रह्म, परमात्मा अने भगवान ए विभिन्न शास्त्रोमा संबोधायेला जुदा जुदा नामो मा तत्वतः भेद नहीं होवा नुं समजाव्यू छे. जुदा जुदा संदर्भो मां परम तत्त्व ने श्रुति (उपनिषदों) मां 'ब्रह्म', गीता आदि स्मृति ग्रंथो मां 'परमात्मा' अने भागवतादि पुराणो मा 'भगवान' कहेवामां आव्या छे. परंतु आ विभिन्न नामो वास्तव मा परात्पर परब्रह्म श्रीकृष्ण माटे ज वापरवा मा आव्या छे केमके भागवते स्पष्ठता करतां कह्यु छे -"कृष्णस्तु भगवान स्वयं". गीता मा पण श्रीकृष्ण स्वयं कहे छे के "वेदश्च सर्वेरहमेव वेद्यो" अर्थात - 'वेद मा (ब्रह्म तरीके) मारुज वर्णन करवा मां आव्यू छे'. अनेक उपनिषदोमां पण अआ वातनी पःरमाणभूतता प्राप्त थाय छे. 'कष्ण' शब्दनी व्युत्पत्ति थी पण ए एक एवुं तत्त्व छे जे 'सदानंद' छे. आनो स्पष्ट अर्थ नहीं थाय के 'कृष्ण' कोईक सामान्य देवता ज नथी परंतु आ जगतनुं मूल करण रुप जे तत्त्व छे तेनो निदेश करवामां आव्यो छे.

आवा अनेक शास्त्र वचनो थी श्रीकृष्ण परमोच्च तत्त्व - पूर्ण पुरुषोत्तम होवा नुं सिद्ध छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी नुं प्रयोजन ते श्रीकृष्ण नी प्राप्ति कारावववानुं होवाथी तेओ पोताना 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद' नामक

ग्रन्थ मां निर्देश करे छे - "भगवानेव फलं".मात्र भगवान अर्थात 'कृष्ण' ज फल छे, तेने पामवा एज पुष्टिमार्ग नुं लक्ष छे. आ उद्देश्य नी पूर्ति माटेज तेमणे "पुष्टि भक्तिमार्ग" प्रकट कर्यो छे.

अनेक प्रमाणो थी आ हकीकत सिद्ध छे के जेवीरीते अनेक प्रदेशो ना राजाओ होइ शके छे, ते सर्वे 'राजा' ज कहेवाय छे, परंतु जे चक्रवर्ती राजा होय छे, ते सर्वोपरि होय छे. बधा राजाओ तेना मातहत होय छे, तेनी आज्ञा मुजब कार्य करे छे. आवु ज स्वरूप श्रीकृष्ण नुं छे. तेणे ज भागवतमां वर्णवेला विविध अवतारो धारण कर्या छे, अर्थात श्रीकृष्ण स्वयं 'अवतारी' छे. गीता तेमज भागवत मां आना अनेक प्रमाणो उपलब्ध छे. विभिन्न देवोनी उपासना नी फल प्राप्ति श्रीकृष्ण करावतां होवा नी स्पष्ठता गीता मा करवामां आवी छे. श्रीकृष्ण कहे छे - "जे श्रद्धा वड़े मनुष्य विभिन्न देवताओ नी पूजा करे छे, तेमने प्राप्त थतुं इच्छित फल तेओ ज आपे छे" (गीता ७/२२).

अगाउ कह्यु तेम 'मर्यादा भक्तिमार्ग' मां भगवान नी कोई विभूति नी उपासना करवा मां आवे छे, जेना द्वारा स्वर्गादि लौकिक फल अथवा विभिन्न प्रकार नी सायुज्यादि मुक्ति प्राप्त थाय छे. भागवत कहे छे - "एते चांश कला पुंशः कृष्णस्तु भगवान स्वयं". तेम विभिन्न देवताओ भगवान ना अंश - कला रूप होवाथी तेमनामां 'आनंद' तत्त्व सिमित मात्रा मा रहेलु छे. 'सच्चिदानंद ब्रह्म ना व्यापक स्वरूप 'अक्षरब्रह्म' नो आनंद पण गणितानंद छे, तेम समजावतां श्रीमहाप्रभुजी कृष्णाश्रय स्तोत्र मां कहे छे - "प्राकृताः सकला देवा गणितानंदकं बृहत, पूर्णानंदो हरिस्तस्मात कृष्ण एव गतिर्मम".

उपरोक्त सर्व हकीकतो थी श्रीमहाप्रभजी ना कृष्ण विशे ना "विशिष्ट" भाव ने स्पष्टतापूर्वक समजी शकाय छे, जेथी तेमना 'अनन्यता' ना मुद्दा ने समंजवा मां सरलता रहे. ....क्रमशः ....
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिती, समाधान"

**************** (१४) ****************

" "पुष्टिसंप्रदाय ना मुलभुत सिद्धांतो (चालु)"

उपरोक्त भगवद शास्रो ना आधारे, कलियुग ना जीवो ना उद्धार माटे शात्रोक्त साधनो पर अवलंबित 'विहिता भक्ति' जेंने 'मर्यादा भक्ति' कहे छे, तेनाथी विलक्षण प्रेमलक्षणा 'पुष्टिभक्ति' नु प्रतिपादन करी सर्वोच्च परम तत्त्व श्रीकृष्ण नी अनन्य भक्ति नो उपदेश आप्यो छे.

श्रीमहाप्रभुजी नो 'श्रीकृष्ण' प्रत्ये नो पक्षपात कोई संकुचित दृष्टिकोण थी नथी परंतु अर्थ-सभर छे, शास्त्रोक्त विधानों ना आधारे छे. तेमणे निबंन्ध ग्रथ नी शरुआत मांज खुलासो करी ब्रह्म, परमात्मा अने भगवान ए विभिन्न शास्त्रोमा संबोधायेला जुदा जुदा नामो मा तत्वतः भेद नहीं होवा नुं समजाव्यू छे. जुदा जुदा संदर्भो मां परम तत्त्व ने श्रुति (उपनिषदों) मां 'ब्रह्म', गीता आदि स्मृति ग्रंथो मां 'परमात्मा' अने भागवतादि पुराणो मा 'भगवान' कहेवामां आव्या छे. परंतु आ विभिन्न नामो वास्तव मा परात्पर परब्रह्म श्रीकृष्ण माटे ज वापरवा मा आव्या छे केमके भागवते स्पष्ठता करतां कह्यु छे -"कृष्णस्तु भगवान स्वयं". गीता मा पण श्रीकृष्ण स्वयं कहे छे के "वेदश्च सर्वेरहमेव वेद्यो" अर्थात - 'वेद मा (ब्रह्म तरीके) मारुज वर्णन करवा मां आव्यू छे'.

आवा अनेक शास्त्र वचनो थी श्रीकृष्ण परमोच्च तत्त्व - पूर्ण पुरुषोत्तम होवा नुं सिद्ध छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी नुं प्रयोजन ते श्रीकृष्ण नी प्राप्ति काराववानुं होवाथी तेओ पोताना 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद' नामक ग्रन्थ मां निर्देश करेछे - "भगवानेव फलं".मात्र भगवान अर्थात 'कृष्ण' ज फल छे, तेने पामवा एज पुष्टिमार्ग नुं लक्ष छे. आ उद्देश्य नी पूर्ति माटेज तेमणे "पुष्टि भक्तिमार्ग" प्रकट कर्यो छे.

अनेक प्रमाणो थी आ हकीकत सिद्ध छे के जेवीरीते अनेक प्रदेशो ना राजाओ होइ शके छे, ते सर्वे 'राजा' ज कहेवाय छे, परंतु जे चक्रवर्ती राजा होय छे, ते सर्वोपरि होय छे. बधा राजाओ तेना मातहत होय छे, तेनी आज्ञा मुजब कार्य करे छे. आवु ज स्वरूप श्रीकृष्ण नुं छे. तेणे ज विविध अवतारो धारण कर्या छे, अर्थात श्रीकृष्ण स्वयं अवतारी छे. गीता तेमज भागवत मां आना अनेक प्रमाणो उपलब्ध छे. विभिन्न देवोनी उपासना नुं फल प्राप्ति श्रीकृष्ण करावतां होवा नी स्पष्ठता गीता मा करवामां आवी छे. श्रीकृष्ण कहे छे - "जे श्रद्धा वड़े मनुष्य विभिन्न देवताओ नी पूजा करे छे, तेमने प्राप्त थतुं इच्छित फल तेओ ज आपे छे" (गीता ७/२२).

अगाउ कह्यु तेम 'मर्यादा भक्तिमार्ग' मां भगवान नी कोई विभूति नी उपासना करवा मां आवे छे, जेना द्वारा स्वर्गादि लौकिक फल अथवा विभिन्न प्रकार नी सायुज्यादि मुक्ति प्राप्त थाय छे. भागवत कहे छे - "एते चांश कला पुंशः कृष्णस्तु भगवान स्वयं". तेम विभिन्न देवताओ भगवान ना अंश - कला रूप होवाथी तेमनामां 'आनंद' तत्त्व सिमित मात्रा मा रहेलु छे. 'सच्चिदानंद ब्रह्म ना व्यापक स्वरूप 'अक्षरब्रह्म' नो आनंद पण गणितानंद छे, तेम समजावतां श्रीमहाप्रभुजी कृष्णाश्रय स्तोत्र मां कहे छे - "प्राकृताः सकला देवा गणितानंदकं बृहत, पूर्णानंदो हरिस्तस्मात कृष्ण एव गतिर्मम".

आ सर्व हकीकतो थी श्रीमहाप्रभजी ना कृष्ण विशे ना "विशिष्ट" भाव ने स्पष्टतापूर्वक समजी शकाय छे, जेथी तेमना 'अनन्यता' ना मुद्दा ने समंजवा मां सरलता रहे. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************(१५) *****************

"पुष्टिसंप्रदाय ना मुलभुत सिद्धान्त" (चालु)

उपरोक्त प्रमाणो थी समजी शकाय छे के 'पुष्टिभक्तिमार्ग' मर्यादामार्ग थी न केवल साधना ना दृष्टिकोण थी भिन्न छे, परन्तु तेनो फल प्राप्ति नो हेतु पण साक्षात परब्रह्म परमात्मा पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण नी प्राप्ति छे. तदर्थ महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जीए प्रवर्तित करेल पुष्टि संप्रदाय ना अनुयायिओ ने मात्र 'कृष्ण भक्ति' नो उपदेश करतां कह्यु छे -"कृष्ण सेवा सदा कार्या" ए "मारो सिद्धान्त छे".(सि. मु. १). आ सिद्धान्त नी पृष्ठभूमि मां स्वयं प्रभु श्री जगन्नाथजी नी आज्ञा छे "एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतं, एको देवो देवकीपुत्र एव ; मंत्राप्येकं तस्य नामानि यानी, कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा". (नि. शा. प्र. ३). भगवाने पोते "कृष्ण सेवा" ने जीव मात्र नुं मुख्य कर्तव्य बताव्यू छे.

श्रीमहाप्रभुजी चतुःश्लोकी ग्रन्थ माँ पण 'धर्म पूरुषार्थ' नो निर्देश करता आज्ञा करे छे "सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिपः ; स्वस्यायमेव धर्मो हि नान्यक्वापि कदाचन" (चतु. १). सर्व भाव थी व्रजाधिप

श्रीकृष्ण ने सेववा, एज पुष्टिजीव नु एक मात्र कर्तव्य छे. तेना कारण नी स्पष्ठता तेमणे करी छे के - "परं ब्रह्म तु कृष्णो हि" (सि. मु.). तेओ पोते "श्रीकृष्णास्य" - श्रीकृष्ण ना वदनावतार होई आ सातत्य ने प्रकट करे ते समजी शकाय छे. प्रभुचरण श्रीगुसाइंजी ए आ हकीकत पर म्होर मारता श्रीमहाप्रभुजी विशे खुलासो कर्यो छे - "वस्तुतः कृष्ण एव". (वल्लभाष्टकं -).

जो ज्ञानमार्गीय आचार्य, जेओ केवल निर्गुण-निराकार ब्रह्म नेज 'परब्रह्म' तरीके ओलखावे छे ते श्रीशंकराचार्यजी ना पट्ट शिष्य मधुसूदन सरस्वती जो एम कहे के "कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने", अर्थात 'श्रीकृष्ण सिवाय अन्य परमतत्त्व शुं होय ते हुं जाणतो नथी', तो मात्र श्रीकृष्ण नेज 'भजनीय' कहेवा मां श्रीवल्लभाचार्यजी ना आशय ने समजवो मुश्केल न थाय !. भक्ति संप्रदाय ना अन्य सर्वे आचार्यो ना मंतव्यों पण गीता- उपनिषद् ना अनेक प्रमाण-वचनो ना आधारे आ हकीकत नुं अनुमोदन करे छे.

परब्रह्म परमात्मा ज्यारे साकार स्वरूप धारण करी 'श्रीकृष्ण' स्वरूपे भूतल पर प्रादुर्भूत थया त्यारे विभिन्न लोकोने तेमना हृदय ना भावोने अनुरूप प्रतिसाद आप्या नुं वर्णन करतां भागवत कहे छे - "कंस नी सभामा प्रवेश करतां श्रीकृष्ण ने निहाळी मल्लोने वज्ररूप, राजाओने 'पुरुष श्रेष्ठ', स्त्रीओ ने साक्षात कामदेव' , गोपजनो ने 'स्वजन जेवा', दुश्मन राजाओने 'दमनकारी', मातापिताने 'पुत्ररूप', कंस ने 'काल रूप', भक्तो ने 'भगवान', अने योगीजनो ने 'परमतत्त्व पुरुषोत्तम' लाग्या. (भा. १०.४३.१७). आवुं सामर्थ्य केवल परब्रह्म श्रीकृष्ण नुं ज होइ शके !. अजन्मा प्रभुए एकज जन्म धारण करी पोतांना विभिन्न व्यूहो द्वारा अनेक कार्यो कर्या छे, ते आपणे तेमनी मथुरालीला, द्वारकालीला इत्यादि ना भागवत आदि अनेक पुराणो मा वर्णित प्रसंगों थी जाणीए छीए.

परंतु श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के श्रीकृष्ण नुं'यशोदोत्संग लालित' स्वरूप ज परब्रह्म नुं निर्दोष - निर्गुण साकार परब्रह्म नुं स्वरूप छे, जेमनी विविध व्रजलीलाओ नुं वर्णन भागवत ना दशम स्कन्ध - नी निरोध लीलाओ मा करवा मां आव्यु छे. भगवान मां चित्त निरुद्ध थई जवुं , जेंने 'निरोध' कहेवाय छे, ते परमोच्च फल श्रीमहाप्रभुजीए बताव्यू छे. तेनी व्याख्या आपी छे - "प्रपंच नी विस्मृतिपूर्वक भगवदासक्ति", अर्थात जगत सम्पूर्णपणे भुलाई जाय अने आपणु चित्त श्रीकृष्ण युक्त बनी जाय, ते अंतिम लक्ष छे, जेनी प्राप्ति करावववानो श्रीमहाप्रभुजी नो आशय छे. तदर्थ ज तेओ कहे छे - "भजनीयो व्रजाधिपः". ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टिसंप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** (१६) *****************

"पुष्टिसंप्रदाय ना मूलभूत सिद्धान्त" (चालु)

अतः समजी शकाय छे के मात्र संकुचित मनोवृत्ति ना कारणे नहीं परंतु शास्त्रीय प्रमाणित दार्शनिक तथ्यो ना आधारे श्रीवल्लभाचर्यजी ए "कृष्णसेवा सदा कार्या" ने 'स्वसिद्धांत' कह्यो छे (सि. मु.) अने पुष्टिजीवो ने माटे मात्र 'यशोदोत्संग लालित श्रीकृष्ण ने अनन्य भावथी भजवा नी आज्ञा करी छे. केमके पुष्टिमार्ग नुं परम फल पण साक्षात पुरुषोत्तम नी प्राप्ति होवाथी, स्वयं श्रीकृष्ण सिवाय तेमना अन्य अंश के कला रूप विभूति थी तेमने प्राप्त करी शकाय नहीं ते तर्क संगत छे. माटे ज श्रीमहाप्रभुजीए

'अनन्यता' पर आग्रह सेव्यो छे.

स्वयं भगवान पोतेज जो गीताजी मा अनन्यता नो बोध आपता होय तो तेथी तेना महत्त्व नुं अन्य प्रमाण शुं होइ शके ?. तद्विषयक भगवान ना एनेक वचनो प्राप्त थाय छे. श्रीकृष्ण कहे छे - "मय्य्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिम् निवेशय" (१२/८).'मारां मां ज मन धारण कर, मारामां ज बुद्धि परोव'. "ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्परा, अनन्येनैव योगेन मां ध्यायंत उपासते, तेषामहं समुद्धर्ता मृत्यु संसार सागरात,भवामि न चिरात्पार्थ मय्यावेशित चेतसाम" (१२/ ६-७). ' मारा पारायण थई अनन्य योगथी मारुं ज् ध्यान धरी मने उपासे छे तेनो जल्दी उद्धार करु छु'. "मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु" (९/३४) ; "अनन्य चेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः, तस्माहं सुलभः पैर्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः" (८/१४), 'जे निरंत्तर बीजा मां चित्त नहीं राखतां नित्य मारुं ज् स्मरण करे छे तेने हूँ सुलभ छुं". भगवान नी माया ने पार करवा माटे पण मात्र कृष्ण कृपाज साधन होवानो निर्देश आपतां भगवान कहे छे - "मामेव ये प्रपद्यन्ते माया मेतां तरन्ति ते" (७/१४). अही पण "मामेव" शब्द सार्थक छे. आवा अनेक वचनो भागवत मां पण उपलब्ध छे, जे कृष्ण नी'अनन्यता' ना दृष्टिकोण ने प्रणाणित करे छे.

तदर्थ श्रीमहाप्रभुजीए अनेक ग्रंथो मा अनन्याश्रय ना महत्व ने समजाववा 'अन्याश्रय' त्याग माटे उपदेश आप्या छे. विवेकधैर्याश्रय ग्रन्थ मा स्पष्टतया आपश्री कहे छे - "अन्यस्य भजनं तत्र स्वतो गमनमेव च, प्रार्थना कार्य मात्रेपि ततोन्यत्र विवर्जयेत", अर्थात श्रीहरि सिवाय अन्यनुं भजन, स्वयं त्यां जवुं, अने कोइपण कार्य माटे अन्यनी प्रार्थना नो सर्वथा त्याग करवो". आज वात नी गंभीरता ने रजु करतां श्रीगुसाइंजी प्रभुचरण कहे छे - "अन्य सम्बन्ध गन्धोपि कंधरमेव बाधते" (विज्ञप्ति). अर्थात - 'अन्यना संबंध नी गंध पण (एटले के अन्याश्रय) गर्दन कपाववा जेवी बाबत छे. संप्रदाय ना अन्य विद्वान आचार्य श्रीहरिराय चरणे पण शिक्षापत्र मां अनेक ठेकाणे अन्याश्रय बाधक होवानो निर्देश कर्यो छे. तेमणे 'बहिर्मुखता' ना चार लक्षणो बताव्या छे तेमां 'अन्याश्रय' नी पण एक महत्व नी भूमिका बतावी छे. .....क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरूप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** (१७) ****************

"पुष्टिसंप्रदाय ना मुलभुत सिद्धान्त" (चालु)

श्रीमहाप्रभुजीए 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रन्थ मा पण 'अनन्यता' नी आवश्यकता समजावता कह्यु छे - "अव्यावृतो भजेत कृष्णम् पूजया श्रवणादिभिः". अर्थात 'अव्यावृत' थईने कृष्ण नुं पूजन श्रवण वगेरे करवुं जोइए. अही 'अव्यावृत' शब्द विशे खुलासो कर्यो छे के जे 'अनन्य भाव' वाळो होय तेज 'अव्यावृत' थई शके. 'भाव' नुं तात्पर्य छे - 'आपणा अंतःकरण मां धारण करेली रूचि के अभिप्राय'. जो एवो भाव मात्र भगवान श्रीकृष्ण मा ज होय तेने 'अनन्य भाव' कहेवाय. तेवी अनन्यता (१) बीजा कोई देवताओ विशे, (२) कोई अन्य लौकिक वस्तु के व्यक्ति विशे, अथवा (३) पुष्टिमार्गीय फल (श्रीकृष्ण) थी बीजु नहीं होवुं जोइए. अर्थात 'कृष्ण भक्ति' अनन्य भाविका होवी जोइए. (सन्दर्भ - षोडश ग्रन्थ - गो.श्री श्या. म. जी. पे.१०४). अही श्रीकृष्ण ना 'पूजन' थी तात्पर्य पण मात्र मर्यादा रीत थी पूजा नुं नथी परंतु फलात्मक श्रीकृष्ण ना सर्वेन्द्रियो थी छे जेनु वर्णन वेणुगीत ना सुबिधिनीजी मा करवामा आव्यू छे.

आथी स्पष्टपणे समजी शकाय छे के पुष्टिभक्ति मा केवल श्रीकृष्ण पत्ये 'अनन्यता नुं महत्त्व केटलूं छे.

भक्ति ज नहीं, शरणागति पण केवल श्रीकृष्ण नी करवा नी आज्ञा करतां स्वयं भगवान अर्जुन ने करतां कहे छे - "सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्व पापेभ्योः मोक्ष ईष्यामि मा सुच".(१८/६८). आ आज्ञा मां "मामेकं" शब्द सारगर्भित छे. भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन ने मात्र पोताने शरणे आववानी आज्ञा करी छे कारणके युद्ध मां संहारना कारणे तेने थनार संभावित पापो माथी मुक्त करवा नुं सामर्थ्य छे. तेओ परब्रह्म होवाथी तेमना मां 'कर्तुम-अकर्तुम-अन्यथाकर्तुम सामर्थ्य छे.

श्रीकृष्ण नी शरणागति नुं महत्व समजावता श्रीमहाप्रभुजी 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थ मा स्पष्टपणे कहे छे - "कृष्ण एव गतिर्मम". कलियुग नी विषमताओं ना कारणे कर्ममार्ग ना छ अंगों - देश, काल, द्रव्य, कर्म, कर्ता अने मन्त्र नी निष्फलता थई गयेल होवाथी मात्र अने मात्र परब्रह्म श्रीकृष्ण ना आश्रय सिवाय अन्य कोई उपाय कारगत न निवड़ी सकवा नो खुलासो आपश्री ए कर्यो छे. तेनु कारण आपता तेओ कहे छे - "प्राकृताः सक्ला देवाः गणितानंदकं बृहत, पूर्णानंदो हरिस्तस्मात कृष्ण एव गतिर्मम". मात्र श्रीकृष्ण पूर्णानंद छे.

उपरोक्त सर्वे प्रमाणो, तथ्यो थी ए वात नो निश्चयपूर्वक खुलासो थाय छे के शा माटे श्रीमहाप्रभुजी मात्र भगवान श्रीकृष्ण नी ज भक्ति तथा शरणागति ना हिमायती छे. माटे पुष्टिसंप्रदाय ना अनुसरण करनारे तेमनी आज्ञा मुजब मात्र श्रीकृष्ण नी अनन्यता पूर्वक भक्ति एवं शरणागति करवी जोइए. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** १८ ******************

........चालु....... 'शरणागति' उपरांत पुष्टिभक्तिमार्ग मां 'समर्पण' पण अति महत्वपूर्ण अंग छे. समर्पण नो सिद्धांत श्रीमहाप्रभुजीए 'नवरत्न' तेमज 'सिद्धांत रहस्य' ग्रंथमां विशेष रुपे समजाव्यो छे. आ सिद्धांतनुं मूल 'बृहदारण्यक उपनिषद' मां निहित छे. त्यां कह्युं छे - "आ आत्मा सर्व प्राणीओनो अधिपति छे, बधाज प्राणीओनो राजा छे. ते जेवीरीते रथना चक्रना मध्यभागमां अने रथना चक्रना घेरावामां सर्वे आराओ समर्पित थयेला होय छे, तेवीज रीते सर्व जीवो, सर्व देवो, सर्व लोक, भूतमात्र अने बधाज आत्माओ आ परमात्मामां समर्पित थयेला छे". (बृह.उ. २.५.१५).

भागवतमां पण स्वयं भगवाननी वाणी छे - "जेओ पत्नी, गृह, पुत्र, आप्तजन, प्राण, धन, ए बधाने छोडीने मारे शरणे आवेला होय छे, तेओनो त्याग हुं केवीरीते करी शकुं?". (भा.९.४.६५). स्पष्टपणे आ वचनो भगवानमां समर्पितताना भावने प्रदर्शित करे छे. भगवानना मात्र शरणागत थवुं ज पुरतुं नथी परंतु तेमने संपुर्णतः समर्पित थवुं पण आवश्यक छे, जेना कारणे आपणे जीवनमां पूर्णतः निश्चिंतता अनुभवी शकीये.

समर्पण मां आपणो प्रभु प्रत्ये स्नेह प्रकट थाय छे. लौकिकमां पत्नी पोताना पति प्रत्येना स्नेहने कारणे ज संपुर्णपणे समर्पित थती होय छे. आपणे आपणुं सर्वकांई पुत्रादिने, तेमना प्रत्येना सहज स्नेहने कारणे ज आपी देता होईए छीए. तदर्थ समजी शकाय छे के समर्पणमां आपणे जेमने समर्पित थईए तेमना प्रत्ये आपणो निर्व्याज प्रेम कारणभूत होय छे.

पुष्टि संप्रदायमां समर्पण पाछल भाव पण आपणो भगवान प्रत्ये निश्छल प्रेम ज छे, परंतु तेनी प्रक्रिया 'ब्रह्मसंबंध' नी दीक्षा द्वारा करवामां आवे छे. ब्रह्मसंबंध मंत्र स्वयं भगवाने महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी समक्ष प्रकट थई ने तेमने आपलो छे, जेमां आ मंत्र द्वारा दीक्षित थनार भगवान श्रीकृष्णने पोताना सर्वस्वनुं समर्पण करवानुं प्रतिग्या पूर्वक निवेदन करी भगवाननुं दासत्व स्वीकारे छे. भगवाने पण खात्री आपी छे के आ मंत्र ग्रहण करनार ना सर्वदोषो निवृत्त थशे, जेथी ते भगवाननी सेवाने योग्य बनशे. श्रीमहाप्रभुजीए पोताना सिद्धांत रहस्य ग्रंथमां आ रहस्य प्रकट करतां खुलासो करतां कह्यु छे - 'साक्षात् भगवता प्रोक्तं तदक्षरसः उच्च्यते' -"ब्रह्मसंबंध करणात् सर्वेषां देह जीवयोः सर्वदोष निवृत्तिः". अर्थात् ब्रह्मसंबंधनी दीक्षा द्वारा सर्व दोषो - सहजा, तेमज देश, काल, संयोग अने स्पर्श थी उत्पन्न थनारा दोषो भगवद् सेवामां बाधक बनशे नहीं.

अहीं महत्वपूर्ण हकिकत ए छे के भगवाने उपरोक्त आग्या श्रीमहाप्रभुजीने प्रत्यक्षमां करेली छे, जेथी तेनी फलदायिता तेमना द्वारा दीक्षा ग्रहण करवामां ज होई शके छे. माटे ज तेमणे अवतार कालमां तो पुष्टिजीवोने प्रत्यक्षमां आ दीक्षा द्वारा तेमनु सर्वस्व समर्पण करावी, भगवद् सेवानो राह बतावी तेमने भगवद् प्राप्ति करावी हती, जेना प्रमाण तेमना सेवकोनी वार्तामां प्राप्त थाय छे, परंतु अनवतार कालमां पण अद्यपर्यंत परोक्षमां निजकुलमां बिराजीने श्रीमहाप्रभुजी ज ब्रह्मसंबंध करावे छे, केमके आ सामर्थ्य मात्र तेमनुं ज छे. .... क्रमशः .... (डो. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टिसंप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** (१९) ***************

.....(चालु)......ब्रह्मसंबंध मंत्र नो उच्चार करतां सौ प्रथम जीव पोताना स्वरुपनी सभानता व्यक्त करता कहे छे के ते हजारो वर्षोथी भगवानथी विखुटो पड्यो छे, जेना कारणे तेनामांथी भगवान माटे तेने जे तापःक्लेश थवो जोईए तेनाविशेनो आनंद लुप्त थई गयो छे. वधुमां ते स्वीकारे छे के अग्यानवश जेने पोताना /नु समजी बेठो हतो ते सर्वस्व - स्त्री, घर, पुत्रादि परिवार, संपत्ति, आलोक अने परलोक वगेरे सघलु, जेमां तेने 'ममता' उत्पन्न थयेली हती, अने तेनो आत्मा, जेना माटे तेने 'अहं भाव' छे, (केमके गुरु द्वारा हवे तेने समजाय छे के, वास्तवमां आमांनुं कांईज पोतानुं नथी), पोते प्रतिग्यापूर्वक ते बधुज भगवान श्रीकृष्णने समर्पण करी, तेमनो दास होवानुं कबुले छे. स्वाभाविक छ के ते श्रीकृष्ण ने पोताना स्वामी होवानो स्वीकार करे छे. आ तेनी शरणागति स्वीकारवानो भाव छे, अने समर्पित थतां अंतमां कहे छे - "हे कृष्ण हुं तमारो छुं".

आम जोईए तो आ गुरुदेवनी साक्षीए, हाथमां तुलसीदल लई ने प्रभु समक्ष संकल्पपूर्वक नी गंभीर प्रतिग्या छे. भगवान स्वयं जीवनी आ प्रतिग्याने केटली गंभीरताथी ले छे, ते अगाउ कहेला भागवतमां भगवान ना वचन (भा.९.४.६५) तेओ कहे छे के 'आवी प्रतिग्या करनारनो हुं त्याग केवीरीते करी शकुं ? तेथी प्रतिग्या करनारनुं दायित्व केटलुं होई शके, ते समजी शकाय छे.

अहिं समजवानी महत्वपूर्ण बाबत ए छे के दीक्षा लेनार कोइ पदार्थ कृष्णने दानमां आपी रह्यो नथी, केमके मूलमां ज ते तेनी हती ज न हीं. भगवाने आ जड-जीवात्मक जगत पोतानी लीला माटे प्रकट कर्यु छे. तदर्थ तेमांना कोईपण पदार्थनो जीव मालिक होई शकतो नथी, अने दान तो स्वमालिकत्व जेमां

होय तेनुं ज आपी शकाय! श्रीमहाप्रभुजीए 'सिद्धांत रहस्य' ग्रंथमां स्पष्टपणे आ बाबत समजावी छे. ब्रह्मसंबंधनी दीक्षा लेता ज्यारे श्रीमहाप्रभुजी द्वारा आ हकिकत समजाय छे, त्यारे जीव, अग्यानवश जेने पोतानुं मानी बेठो हतो ते प्रभुनुं छे तेम तेमने निवेदन करे छे, प्रतिग्यापूर्वक जणावे छे. तेथी तेने 'आत्मनिवेदन मंत्र' नी दीक्षा पण कहेवाय छे, अने आ प्रक्रियाने 'समर्पण' कहेवामां आवे छे.

'समर्पण' अने 'दान' नी प्रक्रिया मां भेद समजवो जरुरी छे. दान आपती वखते ते आपनार कोइ दाननी वस्तु परथी पोतोनी मालिकियत समाप्त करी दान लेनार ने तेनो मालिक बनावे छे. तेथी त्यारपछी ते दान आपेली वस्तु पर तेनो अधिकार रहेतो नथी, तेथी ते तेनो उपयोग करी शके नहीं. आ कारणथीज कोई देवने भेट करेल पदार्थ देवद्रव्य बनवाथी तेना स्व-उपयोग नो शास्त्रमां निषेध करवामां आव्यो छे. परंतु प्रभुने समर्पण करेला पदार्थो तेमने प्रत्यक्ष -परोक्ष विनियोग कराव्या पछी, तेमना प्रसाद रुपे पोताना उपयोगमां लई शकाय, अने तेथी ज श्रीमहाप्रभुजीए स्वामी-सेवक भावथी समर्पित जीवन नो सरस राह बताव्यो छे. ...... क्रमशः.......   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टिसंप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************** २० ****************

.... चालु ....श्रीमहाप्रभुजी नवरत्न ग्रंथमां समजावे छे के जेणे आत्मनिवेदन करेल छे ते दास रुपे भगवाननी साथे जोडाई गयेलो होय छे. तेना कारणे ते निश्चिंत बनी जाय छे. एवा पुष्टिजीवना जीवनमां सुखदुःख जे कांई आवे तेने भगवाननी ईच्छा मानीने स्वीकारी लेवुं जोईए. ते विशे क्यारेय चिंता करवी जोईए नहीं. आथी समजी शकाय के समर्पित जीवन जीवने चिंतामुक्त बनावे छे.

अगाउ कह्यु तेम पुष्टिसंप्रदाय ए 'पुष्टिभक्तिमार्ग' छे. तदर्थ तेनो मुख्य पायो 'भक्ति' छे. भक्तिनी व्याख्या नारद पंचरात्रमां आपवामां आवी छे - "भगवानना माहात्म्यग्यान साथे तेमनामां सुदृढ सर्वतोधिक स्नेह", तेने "भक्ति" कहेवाय. श्रीमहाप्रभुजीए निबंध ग्रंथना शास्त्रार्थ प्रकरणमां भक्तिनी आज परिभाषानो उल्लेख कर्यो छे. (का. ४२) . आ व्याख्यानुं विश्लेषण करतां समजाय छे के 'भक्ति' ना बे आवश्यक अंग छे - १. भगवाननुं भाहात्म्यग्यान अने २. भगवानमां कदि न डगे तेवो स्नेह. जो भगवानना माहात्म्यनु, तेमना सामर्थ्यनु ग्यान थाय तो तेमनी 'शरणागति' सिद्ध थाय, जेवीरीते लौकिकमां पण आपणे सामर्थ्यवान व्यक्तिनो आश्रय करीए छीए, केमके तेज आपणुं रक्षण करवा समर्थ होई शके. भक्तिनुं बीजु अंग 'स्नेह' छे, जे जीवने भगवान ने सर्व-समर्पण करवा प्रेरे छे, जेम लौकिकमां स्त्री-पुत्रादि प्रत्येना स्नेहना कारणे आपणें तेमने बधुं आपी देता होईए छीए. भगवानमां पण आपणो निस्वार्थ सर्वतोधिक प्रेम हशे तो तेमनामां आपणो समर्पण नो भाव सिद्ध थशे. आम शरणागति अने समर्पण नी सिद्धिमां 'भक्ति' रहेली छे ते समजी शकाय छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी भक्तिने पुष्टिमार्गनो मुख्य पायो बतावे छे.

भक्तिनुं ने दृढ करवाना उपाय श्रीमहाप्रभुजीए 'भक्तिवर्धिनी' ग्रंथमां समजव्या छे. 'भक्ति' शब्द 'भज' धातुने 'क्तिन' प्रत्यय लगाडवाथी बन्यो छे. तेनो सादो अर्थ थाय - 'प्रेमपूर्वक (लागणी सभर) करवामां आवती सेवा'. भक्ति ए जीवात्मामां प्रकट थाय छे जेनुं भगवाने स्वयं भक्तिमार्गमां वरण कर्यु होय. सृष्टिनी उत्पत्ति वखते जीव ज्यारे भगवानथी छुटो पडे छे त्यारे तेओ जे जीवोनुं पोतानी सेवा माटे वरण करे छे ते पुष्टिजीव कहेवाय. त्यारे ते वरण तेमनामां बीजभाव रुपे स्थापित करे छे जे तेमनामं सदा विद्यमान रहे

छे.

भक्तिनुं ते बीज कोईक जन्ममां जयारे भगवान तेनो उद्धार करवा ईच्छे त्यारे तेने कोईक सद्गुरु नी कृपा अथवा भगवदीयनो सत्संग प्राप्त थाय छे. त्यारे तेवा अनुकुल वातावरणमां ते वर्षोथी धरबायेलुं बीज अंकुरित थाय छे अने उत्तरोत्तर ते पल्लवित, पुष्पित, थई फलित थाय छे. आम जे जीवमां भगवत्-कृपा बीजभाव रुपे अस्तित्व धरावे छे, ते योग्य संजोग प्राप्त थतां प्रेम, आसक्ती अने व्यसन तथा अलौकिक सामर्थ्य ना रुपमां अलग अलग अवस्थाओ प्राप्त करे छे. तेने पुष्टिभक्ति कहेवाय छे. ज्यारे भगवाननी कृपा भगवान तरफथी भक्तनी दिशामां वहे छे, त्यारे तेने 'पुष्टि' कहे छे, अने ज्यारे ते जीवना ह्रदयमां परावर्तित थईने भगवाननी दिशामां अग्रेसर थाय छे, तेनेज 'पुष्टिभक्ति' कहे छे...........

क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टिसंप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

****************** २१ ***************

.... चालु........ श्रीमहाप्रभुजीए भक्तिवर्धिनी ग्रंथमां :अव्यावृत' तेमज 'व्यावृत अधिकारी जीवोनी भक्तिना बीजभावने दृढ करवाना उपाय विस्तारथी बताव्या छे. तेओ आग्या करे छे - "गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः". अर्थात् पोताना घरमां परिवार साथे रहीने 'स्वधर्मनुं आचरण करतां एटले वर्णाश्रम धर्म निभावता अव्यावृत थईने भगवद् भजन करवुं जोईए. आपश्री सर्वनिर्णय- निबंधमां पण आग्या करे छे - "स्वधर्माचरणं शक्त्या" (का. २३८). अहीं वर्णाश्रम धर्म नुं यथाशक्ति वहन करवानो आपश्रीनो निर्देश छे.

श्रीमहाप्रभुजी सुबोधिनीजीमां समजावे छेके ज्यां सुधी आ देह छे अने तेनी साथे आपणी अहंता-ममता जोडायेली छे, त्यां सुधी वर्णाश्रम धर्मज स्वधर्म छे. ज्यारे देहाभिमान शिथिल धवा लागे त्यारे ज भगवद् दास्य या तो भगवत्सेवा आत्मदृष्टिथी जोतां स्वधर्म बनी जाय छे. त्यारे वर्णाश्रम धर्म पण परधर्म बनी जाय छै. (सु.३-२८-२).आरीते पोताना गृहस्थ थर्मनो निर्वाह करतां कृष्णभजनमां तत्पर थवानो श्रीमहाप्रभुजीए उपदेश आप्यो छे.

भागवतमां नवधा भक्ति - श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, पादसेवन, वंदन, दास्य, सख्य अने आत्मनिवेदन नुं निरुपण करवामां आव्यु छे. ते प्रत्येक 'मर्यादा भक्ति' ना प्रकार छे. परंतु 'पुष्टिभक्ति' ना ते अंगो छे. पुष्टिभक्ति ना बे प्रकार बतावववामां आव्या छे - 'नाम सेवा' अने 'स्वरुप सेवा'. उपरोक्त प्रथम त्रण प्रकारनी भक्ति नामसेवा अंतर्गत छे ज्यारे ते पछीनी त्रण भक्ति स्वरुप सेवा नो बहिरंग प्रकार छे अने दास्य-सख्य-आत्मनिवेदन अंतरंग स्वरुप सेवा ना अंगभूत छे. वास्तवमां भक्तिना आ नव सोपान चढवाथी दशमी 'प्रेमलक्षणा - पुष्टिभक्ति' सिद्ध थाय छे.

श्रीमहाप्रभुजी 'अव्यावृत' थईने, अर्थात् अनन्यभावपूर्वक, एटलेके - कोई अन्य देव, लौकिक कामना अथवा पुष्टिमार्गीय फलथी अतिरिक्त रुचि रहित थईने श्रीकृष्ण' ना पूजन-श्रवण आदिनो निर्देश करे.छे. जेओ व्यावृत होय तेमने आपश्रीए स्वरुपभजन ने बदले नामभजनमा़ प्रवृत्त थवानो निर्देश कर्यो छे, जेना परिणाम स्वरुप तेमनो बीजभाव उत्तरोत्तर प्रेम-आसक्ति-व्यसन अवस्थाओमां विकसित थई शके. ....
क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टिसंप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

*************** २२ *****************

...... (चालु) .... भक्ति, शरणागति, समर्पण उपरांत पुष्टिमार्गनो चोथो आधार स्तंभ 'सेवा' छे. माटेज श्रीमहाप्रभुजीए सिद्धांत मुक्तावली ग्रंथमां "कृष्ण सेवा सदा कार्या" ने 'स्वसिद्धांत' बताव्यो छे. तेओ कहे छे - 'आ सिद्धांत पूर्वमां निश्चित थई चुकेलो छे. श्रीमहाप्रभुजीनी प्रथम पृथ्वी परिक्रमा दरम्यान जगन्नाथजीमां राजा नी धर्मसभामां चर्चायेला चार प्रश्नो - मुख्य शास्त्र कयुं, मुख्य देव कोण, मुख्य मंत्र कयो, अने मुख्य कर्तव्य शु ?, तेनो खुलासो स्वयं भगवान श्रीजगन्नाथजीए करेलो के - "एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतं, एको देवो देवकीपुत्र एव, मंत्रोप्येकं तस्य नामानि यानि, कर्माप्येकं कृष्ण देवस्य सेवा". अर्थात् भगवाने गायेली गीता मुख्य शात्र छे, स्वयं श्रीकृष्ण मुख्य देव छे, तेमनुं नाम एटलेके अष्टाक्षर मंत्र - 'श्रीकृष्णः शरणं मम' मुख्य मंत्र छे, अने 'कृष्णसेवा' एज जीवनुं मुख्य कर्म छे. तेथी ज आ भगवद् आग्याना आधारे श्रीमहाप्रभुजीए 'कृष्णसेवा' नो स्वसिद्धांत ना रुपे निर्देश आप्यो छे.

'भक्ति' शब्दनुं तात्पर्य पण 'प्रेमपूर्विका सेवा' ज छे. जेना प्रत्ये आपणो स्नेह होय तेने सेवा द्वाराज रीझवी शकाय. भक्तिनी अभिव्यक्ति निश्वार्थ सेवा द्वारा थाय. 'कृष्णसेवा' नी विशेषता समजावता श्रीगुसांईजी कहे छे के 'कृष्ण' स्वयं स्वतः पुरुषार्थ छे. 'कृष्णसेवा' द्वारा ज 'कृष्ण' नी प्राप्ति थई शके छे. अने पुष्टिमार्गमां तो "भगवानेव फलम् ", श्रीआचार्यजीनो निर्देश छे (पुष्टिप्रवाहमर्यादा भेद ग्रंथ). श्रीमहाप्रभुजीए अनेक स्थाने भगवद् सेवानी प्राधान्यता बतावी छे. चतुःश्लोकी ग्रंथमां धर्म पुरुषार्थ समजावता तेओ आग्या करे.छे - "सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः, स्वस्यायमेव धर्मो ही नान्यक्वापि कदाचन". अर्थात् व्रजाधिप श्रीकृष्ण ना भजन एटले के सेवन सिवाय पुष्टिजीवनो अन्य धर्म - कर्तव्य होई शकतुं नथी.

आम 'कृष्णसेवा' पुष्टिमार्गीय साधना प्रणालीनुं अभिन्न अंग छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी निबंध ग्रंथमां पण आग्या करे छे - "श्रीकृष्णं पूजयेद् भक्त्या यथा लब्धोपचारिकैः, यथा सुंदरतां याति वस्त्रैराभरणैरपि, अलंकुर्वीत सप्रेम तथा स्थानपुरःसरम्" (स.नि.प्र.-२२९). श्रीकृष्णनी भक्तिपूर्वक पूजा (सेवा) यद्दच्छाथी प्राप्त थयेला द्रव्योथी करवी, कारणके कृष्ण ज भगवान छे, अवतारी छे, पुर्णानंद छे. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिती, समाधान"

***************** २३ ***************

.... (चालु) .... श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिसेवा नो सिद्धांत तेमना 'सिद्धांत मुक्तावली' ग्रंथमां विस्तारपूर्वक समजावतां कहे छे - "चेतस्तत् प्रवणं सेवा",अर्थात् प्रभुमां चित्त परोवाई जवुं तेनुं नाम सेवा छे. तेनेज तेओ फलरुप 'मानसी सेवा' कहे छे. एवी अवस्था प्राप्त करवा माटे तेमणे साधन रुपा 'तनु-वित्तजा' सेवा नो निर्देश कर्यो छे. तेमां तेमनो आशय आपणो देहादिमां रहेलो अहं भाव अने जेने आपणे पोतानु गणीये छीए अर्थात् जेमां आपणुं ममत्व छे, ते स्त्री-पुत्रादि सर्व व्यक्ति अने घर- संपत्ति आदि वस्तुओनो प्रभु मां विनियोग करवानो छे. तेना कारणे आपणी 'अहंता अने ममता' प्रभु साथे जोडाई जतां, आपणुं चित्त प्रभुमां प्रवण थवामां बाधा आवशे नहीं.

ब्रह्मसंबंध करती वखते आपणे प्रतिग्यापूर्वक आपणा सर्वस्वनु, प्रत्येकनुं नाम दईने, भगवान श्रीकृष्णने समर्पण करतां होईए छीए. परंतु त्यारे तो मात्र प्रभुने निवेदन करी तेमना दास होवानुं स्वीकारीए छीए. तेथी समर्पण नी सार्थकता त्यारे ज थाय ज्यारे प्रभुनी नी सेवामां आपणा देहनो तेमज आपणी संपत्ति ईत्यादिनो प्रत्यक्ष के परोक्ष रीते विनियोग करीए. आपणुं दासत्व अने आपणी कबुलात के 'हे कृष्ण हुं तारो छुं' मात्र प्रभुसेवा करवाथी ज सिद्ध थई शके. जो आपणे आपणा अहंता-ममतास्पद पदार्थो नो प्रभुमां विनियोग न करिये तो आपणा मनमां अहंता-ममतास्पद संसार उत्पन्न थशे जे आपणा बंधनना कारणरुप छे.

श्रीमहाप्रभुजी समजावे छेके संसारना दुःखोनी निवृत्ति ए 'तनू-वित्तजा सेवानो गौण लाभ छे. परंतु ते प्रारंभिक अवस्थानी साधन रुप तनु-वित्तजा सेवा आपणुं चित प्रभु साथे जोडाई जतां फलरुप मानसी नी अवस्था प्राप्त करी लेशे. आवी अवस्था ज उत्तरोत्तर तन्मयता नी दशा पछी सर्वात्मभाव मां परिणमित थई जाय छे. त्यारे जीवने भजनानंदनी प्राप्ति थाय छे, जे मात्र साचा मनथी अने अनन्य भावथी श्रीकृष्णनी भक्त्यात्मिका सेवा द्वारा ज उपलब्ध थई शके छे. तदर्थ 'सेवा' ए पुष्टिमार्गनुं अति महत्व नुं अंग छे, जेनी समज श्रीमहाप्रभुजीए षोडशग्रंथोमां सिद्धातमुक्तावली उपरांत पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद, संन्यासनिर्णय तथा सेवाफलमां आपी छे.

श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - "भगवानेव फलम्". श्रीकृष्णने प्राप्त करवा, तेमना दिव्य आनंदनो अनुभव करवो ते पुष्टिजीव नुं अंतिम ध्येय छे अने तेने माटे ज पुष्टि संप्रदारने अनुसरवानुं एक मात्र प्रयोजन छे. तेने माटे उपरोक्त भक्ति, शरणागति, समर्पण अने सेवा ए चार परस्पराश्रित अंगो छे, तेनु यथार्थ ग्यान प्राप्त करी, तेनु गंभीरतापूर्वक नुं आचरणज अंतिम लक्षने प्राप्त करावी शके.

.... क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************** २४ ******************

.... चालु ...... बीजी महत्त्वनी बाबत श्रीमदाचार्यचरणे समजावी छे के दरेक मनुष्यना जीवनमां चार पुरुषार्थो - 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष' नुं विशिष्ठ स्थान रहेलुं छे. प्रत्येक मनुष्यनी प्रवृत्ति 'दुःखोनी निवृत्ति अने सुखनी प्राप्ति' माटे होय छे. अर्थात् मनुष्यना आ बे मुख्य पुरुषार्थो छे, जेनो शास्त्रोए उपरोक्त चार पुरुषार्थोना रुपमां वर्णव्या छे. सामान्यतः प्रवाहमार्गमां लोक संबंधी पुरुषार्थो - अर्थ तथा काम नी सिद्धिनी कामना होय छे. ज्यारे मर्यादामार्गमां धर्म अने मोक्ष सहित धर्मार्थकाममोक्ष रुप सिद्धिनी कामना होय छे. परंतु ए प्रकारनी कामनाओ पुष्टिमार्गीय जीवना ह्रदयमां चिरस्रायी बनी शकती नथी.

श्रीमहाप्रभुजीए 'बालबोध' ग्रंथमां भिन्न भिन्न ऋषिओ द्वारा पोतपोतानी रीते कहेवामां आवेला मोक्षप्रतिपादक चार शास्त्रोमां वर्णवेला मोक्षना स्वरुप.समजावीने खुलासो कर्यो छे के ते पुष्टिजीवोने माटे अपेक्षित नथी. आ ग्रंथनी रचना आपश्रीए, पुष्टिजीव भ्रमित न थई जाय ते हेतुथी करी छे, जेमां तेमणे सर्वसिद्धांतो ना संग्रहनुं निरुपण.कर्यु छे, 'स्व-सिद्धांत' नुं नहिं. जेथी एकवार भिन्न भिन्न सिद्धांतो ना साधन अने तेना द्वारा प्राप्त थता फल विशे समजाई जाय तो पुष्टिजीवने अन्य मार्गो पर भटकवानी स्थिति उभी न थाय (जे वर्तमानमां देखाई रही छे). माटे आ प्रथम ग्रंथ जाणवानी आवश्यकता छे.

एक जागरुक गुरु तरिके श्रीमहाप्रभुजी पुष्टिजीवोनी केटली तकेदारी राखे छे ते आनाथी समजी शकाय छे. तेओ समजावे छे के बधा ज मोक्षशास्त्रो सांसारिक दुःख दुर करवाना, पारलौकिक सुखनी तथा मोक्ष प्राप्तिना साधन तरीके उपयोगी निवडी शके परंतु आ संसारमां रहीने पण भगवत्सेवा तेमज भगवत्कथा द्वारा पुष्टिजीवने भजनानंदनी प्राप्ति थई शके छे, ते वात तेमणे 'चतुःश्लोकी' गंथ द्वारा समजावी छे. तेमां तेमणे पुष्टिमार्गीय जीवो ना धर्मार्थकाममोक्ष ना आदर्श स्वरुपनी विवेचना करी छे.

अगाउ जोयुं तेम पुष्टिमार्गीय भक्ति निष्काम - निरुपाधिक होय छे. तेमां वास्तवमां स्वयं भगवाननी कृपा ज पुष्टिजीवना ह्रदयमां भक्तिनुं स्वरुप धारण करे छे. भगवद् कृपा जीवना साधन पर अवलंबित न होवाथी ते कोईपण जातना हेतु विना ज पुष्टिजीवमां भक्ति रुपे प्रकट थाय छे, जे उत्तरोत्तर प्रेम, आसक्ति अने व्यसन दशाने प्राप्त थाय छे.

तदर्थ श्रीमहाप्रभुजीए चतुःश्लोकी ग्रंथमां पुष्टिमार्गीय पुरुषार्थोनुं विलक्षण स्वरुप भागवतजीमां वर्णित 'वत्रासुर चतुःश्लोकी' मां वत्रासुरना भावोनी अभिव्यक्तिना आधारे समजाव्यु छे. तेमना द्वारा विरचित विवृतिमां तेओ कहे छे - "पुष्टिमार्गे हरेर्दास्यं धर्मार्थो हरिरेव हि, कामो हरिदिदक्षैव मोक्षो कृष्णस्य चेद् धृवम्". अर्थात् श्रीहरिना दास होवुं ज पुष्टिमार्गीय धर्म छे, पुष्टिभक्तोना अर्थ रुप पण स्वयं श्रीहरि ज छे. श्रीहरिना दर्शन नी कामना ज पुष्टिमार्गीय काम (ईच्छा) होई शके अने सर्वात्मभावथी श्रीकृष्णना बनी जवुं, एज पुष्टिभक्तोनो मोक्ष पुरुषार्थ छे. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** २५ *****************

...... (चालु) .... उपरोक्त वृत्रासुर चतुश्लोकीनो मर्म श्रीमहाप्रभुजीए 'चतुःश्लोकी' ग्रंथमां चतुर्विध पुरूषार्थ ना रुपमां समजाव्यो छे.

प्रथम पुरुषार्थ 'धर्म' नुं निरुपण करतां आपश्री आग्या करे छे के 'व्रजना अधिपति श्रीकृष्ण' नुं भजन सर्वभाव थी करवुं एज पुष्टिजीवनो एकमात्र धर्म छे. केवल श्रीकृष्णना भजन अर्थात सेवा करवानुं प्रयोजन ए छे के तेओज पूर्ण परमानंद स्वरुप होवाथी व्रजभक्तोने माटे तेमज तेमनी भावना अनुसार भक्ति करनार समस्त पुष्टिजीवोने बधाज पुष्टिफलो ना दाता अने पुष्टिफल रुप पण छे. तेथी कहे छे - "अनन्य गोकुलस्वामी फलदाता फलात्मकः", अर्थात् श्रीकृष्ण गोकुलना स्वामी फलदाता छे अने स्वयं फलरुप पण छे. तेथी तेमने आपणा ह्रदयना सर्वभावोथी - 'हे देवाधिदेव ! तुं मारे माटे सर्वस्व छे, माता-पिता, बंधु-मित्र, धन-विद्या वगेरे सर्व कांई छे.' तेवा अथवा मधुर आदि भावो राखीने तेमनुं अनन्यतापूर्वक भजन-सेवन करवुं जोईए तेम समजावे छे.

वधु खुलासो करतां आपश्री कहे छे के 'कृष्णसेवा' वीना बीजा षधा धर्मो पूष्टिजीवना स्वाभाविक धर्मो होता नथी, परंतु उपाधिवाला धर्मो होय छे. अविद्याना कारणे थतां बंधननने लीधे उत्पन्न थती अहंता-ममता ना कारणे अन्य धर्मो पण आपणे माटे कर्तव्य बनी जतां होय छे. परंतु भगवत्सेवानुं कर्तव्य आपणा आत्माना वास्तविक स्वरुप-बोध ना उपर आधार राखे छे. (केमके आपणुं साचु स्वरुप आपणो आत्मा - भगवदंश छे). बीजा बधा धर्मो अथवा कर्तव्यो देश-काल-द्रव्य-मंत्र-कर्म-कर्ता नी शुद्धिनी अपेक्षा राखे छे. ज्यारे भगवद्सेवा मात्र आपणा ह्रदयना साचा भावनी ज अपेक्षा राखे छे. तेथी ज वृत्रासुरे पण भगवान पासे

मोक्ष माटे विनंति करी नथी परंतु भगवानना दास बनवानी प्रार्थना करी छे. तेणे कामना करी छे के तेनी वाणी सदा भगवानना गुणगान करे, अने तेनी काया सर्वदा भगवाननी सेवा करती रहे.

बीजा पुरुषार्थ 'अर्थ' विशे श्रीमहाप्रभुजी कहे छे के स्वयं भगवान पोतेज पुष्टिजीव माटे अर्थ रुप छे. भगवान नु लक्षण एवुं छे के प्रार्थना नी अपेक्षा राख्या विना ज भक्तना हितमां अपेक्षित तेनुं ऐहिक - पारलौकिक योगक्षेम (आवश्यकताओनी प्राप्ति अने अने प्राप्त वस्तुओनुं रक्षण) नु अने स्वरुपानंदनुं दान तेओ स्वयंज करे छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी आग्या करे छे के प्रभुनी समर्थतामां विश्वास राखी पुष्टिजीवे निश्चिंत रहेवुं जोईए. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** २६ ****************

......(चालु)...... श्रीकृष्ण दर्शन नी कामनाने श्रीमहाप्रभुजी त्रिजो 'काम पुरुषार्थ' बतावे छे. अहिं दर्शनाभिलाषा कोई सीमित अर्थमां नथी परंतु सर्वेन्द्रियोथी भगवाननी अनुभूतिनी ईच्छा छे, जेनुं वर्णन "अक्षण्वतां फलमिदं" पदने समजाववा आपश्रीए 'वेणुगीत' ना सुबोधिनीजीमां कर्युं छे. भगवाननी साथे संलाप, मले त्यारे तेमना दर्शन, तेमनो आश्लेष, स्पर्श, अधरामृतनुं पान, भोग, रोमांच थवो, कूजननुं श्रवण आदि सर्व ईन्द्रियोथी भगवानना स्वरुपनो अनुभव ए ज पुष्टिभक्तनी कामना होई शके. निरोधलक्षण ग्रंथमां पण श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - "संसारावेशथी दूषित ईन्द्रियोनु हित एमां समायेलुं छे के तेमने परमानंद प्रभु श्रीकृष्णमां जोडी देवामां आवे. दर्शन, स्पर्श, श्रवण, कीर्तन, ध्यान, वगेरे क्रियाओ द्वारा आन्तर - बाह्य बधी ईन्द्रियोने भगवदाभिमुख बनाववी जोईए. जे ईन्द्रियोनो भगवत्कार्यमां विनियोग शक्य न होय तेना उपर विजय मेलववा प्रयास करवो जोईए.

चोथा 'मोक्ष पुरुषार्थ' छे - 'सर्वात्मभावथी श्रीकृष्णना बनी जवुं'. एनुं तात्पर्य 'प्रपंचनी विस्मृति थवी अने श्रीकृष्णमां आसक्ति, अर्थात् भक्तने कृष्णानुभूतिनुं व्यसन थई जाय एवी स्थिति छे. ज्यारे संयोगमां भजन (सेवन) अने वियोगमां स्मरण निरंतर चालु रहे तो तेज पुष्टिमार्गीय भक्तनी मुक्ति छे. पुष्टिमार्गमां भगवानमां सायुज्य पामवानी अथवा अन्य कोईज अपेक्षा नथी परंतुं प्रत्यक्षमां भगवत् सानिध्य अने सेवानु सुख मले ए ज पुष्टिमार्गीय मोक्ष छे.

तदर्थ श्रीमहाप्रभुजी 'भक्ति' ने पांचमो पुरुषार्थ कहे छे. हकिकतमां उपरोक्त चतुर्विध पुरुषार्थो धर्मार्थकाममोक्ष भक्तिना अंगरुप होवा जोईए. ते सर्व भक्तिनी प्राप्तिमां सहापक होवा जोईए, अने तेज तेनी सार्थकता छे. पुष्टिभक्ति 'मार्ग' छे अने 'गंतव्य' पण छे. ते साधन छे तेम फल पण ते ज छे. एटला माटेज आपश्री चतुःश्लोकी ग्रंथमां संयोग-वियोगमां निरंतर भजन-स्मरण चालु रहेवा जोइए तेम आग्या करे छे. तेने ज आप पुष्टिमार्गीय मोक्ष तरीके समजावे छे. पुष्टिमार्ग द्वारा अन्य क्यांय पहोंचवानुं होतुं नथी. निरंतर आ मार्ग पर चालता रहेवानुं छे. तेथी ज कहे छे - चरवेति ! चरवेति !! चरवेति !!!. .... क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत.स्थिति, समाधान"

***************** २७ *****************

.... चालु........ महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीए उपरोक्त वेदादि शास्त्रोना प्रमाणोनी एकवाक्यता ना आधारे वेदांतना निचोडरुप 'शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद' नी विशिष्ट दार्शनिक विचारधारानु प्रतिपादन कर्यु छे, जेना द्वारा तमणे श्रीकृष्ण ज परमतत्त्व ब्रह्म-परमात्मा-भगवान होवानुं प्रतिपादन कर्यु छे. तेओ निबंध ग्रंथमां कहे छे - "प्रमेय हरिरेव एकः". अर्थात् सृष्टिमां अस्तित्व धरावता सर्व नाम-रुप-कर्म बधुं ज ते पोतानी लीलार्थे श्रीहरि - श्रीकृष्ण ज बन्या छे. तेमनामांथी ज जड-जीवात्मक जगत अस्तित्वमां आव्यु छे, तेणे ज पुष्टि,प्रवाह, मर्यादा आदि विविध जीवो उत्पन्न कर्या छे. तेओ समजावे छे के तेमां पण 'पुष्टिजीवो' ने पोताना श्रीअंगमांथी पोतानी सेवा माटेज प्रकट कर्या छे. अने तेथी पुष्टिजीवोनुं कर्तव्य मात्र श्रीकृष्णनी सेवा छे. अगाउ कह्यु तेम स्वयं भगवान श्रीजगन्नाथजीए "कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा" एम आग्या करीने श्रीमहाप्रभुजी ना सिद्धांत "कृष्णसेवा सदा कार्या" नु प्रमाण पुरुं पाड्यु छे.

भगवद् वदनावतार श्रीमहाप्रभुजीए भगवद् आग्यानुसार ज भगवान थी छुटा पडेला पुष्टिजीवोना उद्धार माटे विशेषतः प्रादुर्भूत थई पोते प्रतिपादित प्रमाणित वैचारिक सत्य - 'शुद्धाद्वैत मत' अंतर्गत, श्रीगोपीजनो ए आचरेला विशिष्ट मार्ग - पुष्टिमार्ग ना आधारे 'पुष्टि संप्रदाय' नामथी विलक्षण 'भक्ति संप्रदाय' स्थाप्यो - प्रवर्तित कर्यो छे. तेना पायामां अगाउ चर्चा करी ते चार आधार-स्तंभो - 'भक्ति-शरणागति-समर्पण-सेवा' छे. तेमणे आ चार विषयोनी ज चर्चा पोताना षोडशग्रंथोमां करी छे, जेथी आ संप्रदायने अनुसरवानी कामना सेवता पुष्टिजीवो सारी रीते तेना विशे जाणीने तदनुसार आचरण करी पोताना जीवनने सार्थक करी शके.

वास्तवमां पुष्टि संप्रदाय ने अनुसरवो सरलत्तम छे, छतां गंभीर पण छे. सरल एटला माटे के तेनी प्रणालिका सामान्य जीवन साथे ओतप्रोत करीने आचरी शकाय तेवी छे. तेने माटे अन्य स़प्रदायो जेवी जटील प्रक्रियाओ नथी, परंतु जीवन ना दृष्टिकोण ने बदलवानी 'कृष्ण लक्षी' बनाववनी होय छे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - 'पुष्टिमार्ग मां प्रमाण-प्रमेय-साधन-फल बधुं ज कृष्ण छे. जीवन मात्र कृष्ण माटे, कृष्णना सुख माटे जीववानुं छे. स्वाभाविक छे के तेनुं ज चिंतन थया करे तो जीवन कृष्णमय बनी जाय ते स्वाभावीक छे.

परंतु तेने माटे श्रीमहाप्रभुजीनी वाणीने, तेमनी आग्याओने, तेमणे प्रतिपादत करेला सिद्धांतोने यथार्थ रुपे जाणवा- समजवा आवश्यक छे. आ विषेनी स्पष्ट आग्या स्वयं श्रीमहाप्रभुजुजीए निबंध ग्रंथ (शास्त्रार्थ प्रकरण) नी शरुआतमां करतां कह्यु छे - "शास्त्रंम् अवगत्य मनोवाग्देहैः कृष्णसेव्यः", अर्थात् शास्त्रनु अध्ययन करवु ते 'कृष्णसेवा' नी पूर्वाश्यक्ता छे. श्रीमहाप्रभुजीए अत्यंत परिश्रमपूर्वक शास्त्रोनो निचोड पोताना ग्रथोमां आलेख्यो छे. हकिकतमां आ संप्रदायने साचा अर्थमां त्यारेज जीवी शकाय, जो तेमां आपणी संपुर्ण निष्ठा होय. खास करीने वर्तमान युगमां ज्यारे मानवी मात्र श्रद्धा करतां तथ्यो ने स्वीकारतो थयो छे, त्यारे तो ग्रंथोनुं ग्यान अनिवार्य थई पडे, कारणके सिद्धांत हमजीए तो क्रिया मां निष्ठा उत्पन्न थाय. श्रीमहाप्रभुजी पोते कहे छे के "निष्ठाना अभावमां फलप्राप्ति थई शकती नथी" (नि.शा.प्र. १८). ते माटेज आपश्रीनी उपरोक्त आग्या सार्थक जणाय छे. भक्तिनी व्याख्यामां पण.'महात्म्य ग्यान' नी अगत्यनी भूमिका बतावी छे. तदर्थ आ संप्रदायना साचा स्वरुपने समजवुं खुब जरुरी छे.

वर्तमानमां गुरुद्वार रुप श्रीवल्लभकुल आचार्यश्रीओनी भूमिका उपरोक्त विषयमां अति महत्वनी छे, केमके श्रीवल्लभ अंश थी विभुषित तेओ श्रीमहाप्रभुजीनी दुर्गम वाणीनो यथार्थ उपदेश तेओ आपी शके. परंतु

वास्तवमां केटलेक ठेकाणे विषम परिस्थिती वर्ताय छे. तद्विषयक नोंध लेवी जरुरी छे.

........क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - सांप्रत स्थिति, समाधान"

*************** २८ ***************

.... (चालु) .... सांप्रत स्थिति

प्रभुचरण श्रीगुसांईजी सर्वोत्तम स्तोत्रमां समजावे छे तेम भगवाने पोतानी ईच्छाथी पोताना माहात्म्यने वाणी द्वारा प्रकट करवा पोताना मुखार्विंदने ए श्वीमहाप्रभुजी स्वरुपे प्रकट कर्या छे. तदर्थ आपश्रीए श्रीगोपीजनोए अपनावेल भगवद् प्राप्तिना मार्ग 'पुष्टिमार्ग' नने तेवीज फल-प्राप्ति कराववा माटे 'प्रेमलक्षणाभक्ति' सर्वोत्तम 'भक्ति संप्रदाय - "पुष्टि संप्रदाय' कर्यो छे, जेना पायामां वेदादि भगवद् शास्त्रो ना अनेक सर्वमान्य प्रमाणो छे, नहीं के मात्र आपनुं वैचारिक चिंतन. तेथी आ संप्रदायनुं अनुसरण करवा ईच्छता दैवीजीवो ना मार्गदशन माटे तद्विषयक सिद्धांतो तेमणे पोताना विभिन्न ग्रंथोमां प्रकाशित कर्या छे.

भगवाननी स्वयंनी इच्छाथी आपश्रीने त्यां पुत्र रुपे प्रकट थनार भगवद् स्वरुप श्रीभगवद् स्वरुप श्रीगुसांईजीए पण श्रीमहाप्रभूजी द्वारा प्रवर्तित करेल संप्रदाय नो अनेकविध विस्तार करी पुष्टिमार्गिय साधनाप्रणालीने एक विशिष्ट दिशा आपी छे. तदर्थ श्रीगुसांईजी पण पुष्टिसंप्रदायना सह-संस्थापक / प्रवर्तक तरीके ओलखवामां आवे छे. तत्पश्चात् भगवानना दिव्यगुणोथी विभुषित तेमना बालको तेमज विद्वान आचार्य वंशजो श्रीहरिरायजी, श्रीपुरुषोतमजी आदि महानुभावोए पण श्रीमहाप्रभुजी - श्रीगुसांईजी ना दुर्बोध सिद्धांतोने समजाववा अनेक ग्रंथो रच्या छे, जेना कारणे आजे आपणे श्रीमदाचार्यचरणनी तात्विक विचारधाराने सारी रीते समजी शकीये छीए.

श्रीगुसांईजीना चतुर्थ पुत्र श्रीगोकुलनाथजीए श्रीसर्वोत्तमजींनी विवृत्तिमां श्रीमहाप्रभुजीना नाम - "स्ववंशे स्थापिताशेष स्वमाहात्म्य स्मयापह" विशे स्पष्टतया खुलासो कर्यो छे के तेमां 'वंश' शब्द पुत्रना अर्थमां छे, अर्थात् ते अशेष माहात्म्य श्रीगुसांईजीनुं छे, तेवो तेनो सूचितार्थ छे, केमके श्रीमहाप्रभुजी सद्दश कोई होई शके नहीं. आ वातनुं अनुमोदन श्रीहरिरायजीए पण कर्युं छे.

आथी स्षष्टपणे समजी शकाव छे के 'पुष्टिसंप्रदाय' जेने आपणे सामान्यतः पुष्टिमार्ग कहिये छीए तेना 'गुरु' श्रीमहाप्रभुजी तेमज श्रीगुसांईजी (तधा श्रीगोपीनाथजी) ज छे, केमके तेओ आ मार्गना संस्थापक तथा तेना सिद्धांतोना प्रतिपादक छे. माटेज तेमणे ग्रंथोमां आलेखेला सिद्धांतो ज पुष्टिसंप्रदायनी सर्व गतिविधिओ माटे मात्र प्रमाणरुप स्वीकारी शकाय.

कोईपण संप्रदाय ना प्रवर्तन / वहन करवा माटे तेना प्रवर्तक आचार्ये चार प्रकारे अनुयायीओने तेना उत्कर्ष माटे उपदेश आपवा आवश्यक गणाय - १. तत्त्वोपदेश, २.सिद्धांतोपदेश, ३. व्यवहारोपदेश अने ४. फलपदेश. तदर्थ आ संप्रदायना वर्तमान प्रवर्तक आचार्यश्रीओ पण ते सर्व बाबतोथी संपुर्णपणे अवगत / पारंगत होवा अपेक्षित होय, कारणके त्यारेज तेओ अनुयायी वर्गने तद्विषयक साचु मार्गदर्शन करी शके.

.... क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, साऔप्रत स्थिति, समाधान"

****************** २९ *****************

'सांप्रत स्थिति ......(चालु).......

श्रीसर्वोत्तमजीमां श्रीमहाप्रभुजीनुं एक नाम ""गुरु" बताव्यु छे. आ नामनुं तात्पर्य छे के श्रीमहाप्रभुजी तेमना द्वारा प्रवर्तित / उपदिष्ट पुष्टिसंप्रदाय नुं परम फल साक्षात् श्रीकृष्णने प्राप्त कराववा समर्थ छे, जेवीरीते कपिलदेवजी सांख्य दर्शन अने मर्यादा मार्गना उपदेशक होवाथी ते मार्ग ना शिष्योना फलदाता छे. अतः तेमने ते मार्गना 'गुरु' कहेवाय छे. आम श्रीमहाप्रभुजी ज पुष्टिसंप्रदाय ना मात्र गुरु होवानो खुलासो श्रीपुरुषोतमजीए कर्यो छे, केमके तेनु फल आपवानी आप क्षमता धरावे छे. आ कारणथी ज तेमणे श्रीवल्लभकुल आचार्यश्रीओने "गुरुद्वार' गणाव्या छे, केमके श्रीमहापरभुजी वर्तमानमां निजवंशमां बिराजीने आ मार्गनी दीक्षा आपे छे, सेवार्थे भगवद् विग्रह पधरावे छे, आ मार्गना सिद्धांतो समजावी अनुयायीओने मार्ग दर्शन आपवानुं दायीत्व नभावे छे. परोक्षमां पण श्रीमहाप्रभुजी गुरुकार्य करी रहया छे, ते आपश्रीनुं विशिष्ट माहात्म्य छे.

समग्र.वल्लभीय सृष्टि (तेना बन्ने अंगो - बिन्दुसृष्टि तथा नादसृष्टि) ए आ वास्तविकताने यथार्थ रुपे समझवी आवश्यक छे. कारणके पुष्टिसंप्रदायना प्रवर्तन माटे समस्त वल्लभीय सृष्टि (तेमना वंशज सहित) ना गुरु एकमात्र श्रीमहाप्रभुजी ज छे अने तेथी आपश्रीए तेमज अन्य पूर्वाचार्योए प्रतिपादित करेला सिद्धांत अने तदनुसार करवामां आवेला अर्थघटन सिवाय अन्य प्रमाण होई शके नहिं. माटे ज सर्व गुरुद्वारभूत वल्लभवंशज आचार्यश्रीओए आ संप्रदायना तत्वोपदेश, सिद्धांतोपदेश, व्यवहारोपदेश अने फलोपदेश श्रीमहाप्रभुजीना मूलभूत सिद्धांतोने सुसंगत होय तेम अनुयायी वर्गने आपवो जरुरी छे, अन्यथा के स्वविचारोथी के पोताना मंतव्य मुजब नहिं.

आजे संप्रदायमां एवी अवधारणा प्रवर्ते छे के ज्यारे कोई श्रीवल्लभकुल आचार्यश्री द्वारा ब्रह्मसंबंध दीक्षा ग्रहण करे.छे त्यारे तेमने प्रत्यक्ष दीक्षादाता आचार्यश्रीनीज गुरु रुपे ओलख प्राप्त थती होय छे. अन्य कोई स्पष्टता त्यारे करवामां आवती नथी. तेथी स्वाभाविक छे के दीक्षार्थी दीक्षादाता आचार्यश्रीने ज व्यक्तिगत रुपे पोताना गुरु मानी ले छे. नानी वयमां बालकोमां तो आ वात दृढपणे स्वीकारी लेवामां आवे छे. मोटाभागे तेमनामां आ वात ठसाववामां आवे छे, कारणके ब्रह्मसंबंध कराव्या पछी तेमने दीक्षादाताना चित्रजी पधरावी तेमना दर्शन - चरणस्पर्श करवानो निर्देश करवामां आवतो होय छे. तेमने त्यारे ए स्पष्टता करवामां आवती नथी के आचार्यश्रीए आद्यगुरु श्रीमहाप्रभुजीनी कानीथी तेने ब्रह्मबंबंध कराव्यु छे, तदर्थ तेमना वास्तविक गुरु श्रीमहाप्रभुजी छे. तदर्थ दीक्षार्थीए दीक्षादातामां श्रीवल्लभवत् भाव राखी तेमना दर्शन-चरणस्पर्श करवा जोईए, अन्यथा नहिं.

पुष्टिमार्गना प्राथमिक ग्यान के कोई विशेष प्रशिक्षणना ना अभावमां आ संप्रदायना सर्वे दीक्षार्थीओ वास्तवमां तेओ श्रीमहाप्रभुजी द्वाराज पोताने दीक्षा प्राप्त थई छे अने तेओ तेमना सेवक बन्या छे तेवुं यथार्थ ग्यान धरावता होवाथी वर्तमानमां प्रत्येक वल्लभकूल आचार्यश्रीओनी भिन्न भिन्न सृष्टि अस्तित्व धरावे छे, ज्यारे हकिकत ए छे के पुष्टिसंप्रदायना समस्त अनुयायीओ मात्र 'वल्लभीय सृष्टि' छे, सौना गुरु मात्र.श्रीवल्लभाधिश ज छे.

आना परिणाम स्वरुप आजे पुष्टिसंप्रदाय अनेक सृष्टिओमां वहेंचायेलो छे, खंडित छे. तेथी तेनी एकरुपता दृष्टिगोचर थती नथी. मोटाभागना आचार्यश्रीओ पोतपोतानी समज, अनुकुलता अने अन्य कारणोसर विभिन्न अर्थधटनो / आग्याओ करतां होय छे जेथी अनुयायी वर्ग असमंजशमां छे, भ्रमित छे अने संप्रदायनी समग्रता जोखम मां छे. आ संप्रदायमां निष्ठा राखनार, श्रीमदाचार्यचरणमां प्रीति अने श्रद्धा राखनार सौ कोईए आ वास्तविकतानी नोंध लेवी जरुरी. .... क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************** ३० ****************

'सांप्रत स्थिति' ....(चालु).........

आपणे जाणीये छीए के भगवाने स्वयं दैवीजीवोना उद्धारार्थे श्रीवल्लभाचार्यजी स्वरुपे प्रकट थईने 'पुष्टि संप्रदाय' प्रस्थापित कर्यो - प्रवर्तित कर्यो छे. पोतानामांथी छुटा पडेला जीवो जेमनुं भगवाने पुष्टिमार्गमां वरण करेल होवा छतां अविद्या ना कारणे तेओ अनेक प्रकारना दोषोथी ग्रस्त थवाने लीधे, पोतानु साचु स्वरुप विस्मृत थई गयेल छे अने अहंता-ममताना कारणे जन्म-मरणना चकरावामां जेओ भटकी रह्या छे.

ते जीवोना दोषोनी निवृत्ति करी पूनः तेमने प्रभु साथे जोडवा माटे स्वयं प्रभुए प्रकट थईने श्रीवल्लभाचार्यजीने ब्रह्मसंबंध मंत्रनी दीक्षा आपी, जीवोने शरणे लेवानी आग्या करी छे. तदनुसार श्रीमहाप्रभुजीए पोताना अवतार कालमां दैवीजीवोने शोधीने, तेमने शरणे लईने तेमनो उद्धार कर्यो हतो, जेनुं प्रमाण संप्रदायनुं वार्तासाहित्य छे.

भगवदाग्या थतां पोते भूतल परथी प्रत्यक्ष स्वरुपे विदाय थया पछी पोताना स्वरुप तेमज सामर्थ्यने पोताना पुत्र श्रीगुसांईजीमां पधरावी तेमना द्वारा पण अन्प पुष्टिजीवोनो उद्धार कर्यो एटलुं ज नहिं, तत्पश्चात् पांचसो वर्षथी नीजकुल द्वारा श्रीमहाप्रभुजी भगवद् स्वरुप होवाना कारणे पोताना अनवतार कालमां पण दैवीजीवोना उद्धारनी परंपरा अद्यपर्यंत चालु राखी छे. ते आपश्रीनुं विशेष माहात्म्य छे. अर्वाचिन समयमां पण अनेक महानुभावोना चरित्रो आ हकिकतने प्रमाणित करे छे.

अवतारकालमां श्रीमहाप्रभुजीए तेमज श्रीगुसांईजीए स्वात्मबल - पोताना प्रमेयबलथी दैवीजीवोनो उद्धार कर्यो, परंतु वर्तमानकालमां पण पोताना 'प्रमाणबल' थी तेवा अनुग्रहित जीवोनो उद्धार करवा श्रीमहाप्रभुजीए पोतानु 'तत्त्वदर्शन' एटलेके शास्त्रीय सिद्धांतो अने 'धर्मदर्शन' अर्थात तेना पर आधारित साधनाप्रणालि पोताना विभिन्न ग्रंथोमां आलेखित कर्या छे, जेना द्वारा तेमनी 'बिंदुसृष्टि' - तेमना वंशजो 'नादसृष्टि' एटलेके पुष्टिसंप्रदायने अनुसार वैष्णव अनुयायीओनै तदनुसार सिद्धांत-बोध अने कर्तव्य-बोध आपी शकाय. आथी एम कही शकायके आजे पण श्रीमहाप्रभुजी पोताना 'वांग्मय ब्वरुप' थी दैवीजीवोना उद्धारनुं 'गुरुकार्य' गुरुद्वार स्वरुप निज वंशजोना माध्यम थी करी रह्या छे. 'वस्तुतः कृष्ण' एवा श्रीमहाप्रभुजी देश-काल अपरिच्छिन्न होवाथी आ वात स्वाभाविक छे.

आथी समजी शकाय छे के श्रीमहाप्रभुजीए स्थापेली परंपरा तेमणे प्रतिपादित करेला 'तात्विक सिद्धांतो' अने तदनुसार तेमणे प्रवर्तित करेली साधनाप्रणाली अनुसारनुं आचरण द्वारा ज 'पुष्टिसंप्रदाय' नी मौलिकता जलवाई रहे अने तेनी फलदायीता अक्षुण्ण रही शके. तदर्थ कोई अन्यथा अर्थधशघटन के स्वतंत्र विचारोनुं स्थान 'पुष्टिसंप्रदाय' मां होई शके नहिं.

अन्य दार्शनिक विचारधाराओ / धार्मिक आस्थाओनो आपणे भले आदर करीए, तेनी आलोचना के टीका-टीप्पणी न करीए, परंतु आपणी श्रीमहाप्रभुजीना सेवक तरीके, पुष्टिसंप्रदायना अनुयायी तरीके तेमना सिद्धांतो मां संपुर्ण विश्वास अने आपश्रीमां अनन्यता राखिये तो ज आपणुं "द्रढ ईन चरणन केरो भरोसो' गावुं सार्थक थई शके !........ क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत परिस्थिति, समाधान"

****************** ३१ *******************

सांप्रत स्थिति ....(चालु)..........

वर्तमानमां जोई शकाय छे के सर्वधर्म समभाव अथवा पुष्टिमार्गने वैश्विक धर्म ना स्वरुपे प्रस्तुत करवाना प्रयास रुपे केटलाक एवा उपक्रमो आयोजित करवामां आवतां होय छे जेमां श्रीमहाप्रभुजी अथवा स्वयं श्रीप्रभुनी "मामेकं शरणं व्रजनी अर्जुनने करेली आग्यानुं स्पष्टतया उल्लंघन करी अन्याश्रयनुं आचरण थतुं जोई शकाय छे. अन्य धर्मो के संप्रदायो प्रत्येनी सहिष्णुता होवी आवश्यक छे, कारणके तेमां भगवाननी कोई विभूति स्वरुप अवतार द्वाराज विशिष्ट प्रयोजनथी ज ते प्रवर्तित करवामां आवेला होय छे. तेथी तेना प्रत्ये अनादर न होवो जोईए. परंतु तेनु देखादेखी अनुसरण करवुं, ते पुष्टिसंप्रदायनी गरिमाने झांखी पाडे छे.

आजे आपणे अनेक महानुभावोने अन्य देवी-देवताओनुं पूजन-अर्चन करतां, मजारो पर चादर चढावतां, आरती उतारतां वगेरे अनेक प्रकारना दृश्यो सोशियल मिडीयामां जोई शकीये छीए. कोई व्यक्ति विशेष नी अंगत मान्यताओ होई शके छे, जेना विशे कोई टीप्पणी करवानो आशय नथी, केमके प्रत्येक व्यक्तिने तद्विषयक विचारो धराववानी / आचरण करवानी स्वतंत्रता होई शके छे, परंतु जो ते मार्गदर्शक / उपदेशकनी भूमिका निभावती होय त्यारे तेनुं आचरण तेना द्वारा अपाता उपदेशने अनुरुप होवुं अनिवार्य छे कारणके अन्यथा तेना उपदेशनी असरकारकता होई शकती नथी. कोई महात्मानुं प्रसिद्ध उदहरण छे के तेमने कोई बालकने गोल न खावानो उपदेश आपतां पहेलां स्वयंंनी गोल खावानी प्रवुत्ति छोडी दीधी हती.

ए समजी शकाय तेवी बाबत छे के जो कोई आचार्यश्री अन्याश्रय कही शकाय तेवी गतिविधियोमां, कोईपण आशयथी के संजगवशात्, स्वयं प्रवृत्त होय तो शुं तेमनो अनन्याश्रय नो उपदेश आपवानो नैतिक अधिकार रही जाय ?, अने जो तेओ आपे तो तेनी असरकारकता रहे खरी ? आ वर्तमानमां गंभीर विचारणीय प्रश्न छे. आजे अनेक आचार्यश्रीओ द्वारा श्रीमहाप्रभुजीना दढाश्रय विशे उपदेश आपता वचनामृतो सांभलवा मलता होय छे, अनन्यताना सिद्धांत समजावाता होय छे परंतु जो ते तेमना आचरणमां दृष्टिगोचर न थतां होय तो तेओ कई रीते अनुयायीने 'सिद्धांतोपदेश' आपी शके ? श्रीमहाप्रभुजीए स्ययं निबंधमां गुरुना लक्षणोनो निर्देश करती कारिका "कृष्णसेवा परं विक्ष्यं......समारदात्" (स.नि.२२७)ना प्रकाशमां खुलासो कर्यो छे के 'जो गुरु कृष्णसेवाने उत्तम बतावता होय तो तेओ जाते केम न करे ?'. आपश्रीना आ वचन सारगर्भित छे. आवा विपरित आचरणने करणे विशेषतः वर्तमानमां युवा पेढी भ्रमित तथा बहिर्मुख थवानी संभावना नकारी शकाय नहिं !

अहिं कोई आचार्यश्रीना विरुद्धधर्माश्रयिता ना सामर्थ्य वीशे प्रश्न करवानो के तेमनी अवमान्यता करवानो आशय नथी, अथवा केटलाक तेने आचार्यश्रीनी 'आसुरव्यामोह लीला' तरीके पण अर्थघटन करतां होय छे, परंतु वर्तमानमां ज्यारे आपणी नवी पेढी ईन्टर्नेट अने कोम्प्युटरना माध्यमथी विभिन्न माहितिथी

अवगत थयेली होय अने तर्क थी विचारवा टेवायेली होय त्यारे बुद्धिगम्य खुलासा आपवा जरुरी छे. आ हकिकत पर ध्यानाकर्षित करवानुं आहिं प्रयोजन छे........ क्रमशः........... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - सःवरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

****************** ३२ *****************

'सांप्रत स्थिति' ......(चालु).....

परंपरागत रीते ज्यारे वर्तमानमां अनवतारकालमां पण श्रीमहाप्रभुजी निज वंशमां बिराजीने पुष्टिसंप्रदायना अनुयायीओने 'तत्वोपदेश - सिद्धांतोपदेश - व्यवहारोपदेश - फलोपदेश 'निज सामर्थ्य' द्वारा करवा माटे तत्पर होय होय त्यारे पोताना वंशजोमां पण तेमणे निबंधना सर्वनिर्णय प्रकरण (का.२२७) मां निर्देश कर्या मुजबना गुरु ना लक्षणो होवा अपेक्षित गणाय.

श्रीमहाप्रभुजीए सिद्धांत मुक्तावली ग्रंथमां "कृष्णसेवा सदाकार्या" ने 'स्वसिद्धांत' बताव्यो छे. कृष्णसेवा ए पुष्टिसंप्रदायनी साधना प्रणालीनुं अनिवार्य अंग छे. तेवी ज रीते श्रीमद्भागवतने तेमणे सर्वसंदेहवारक चतुर्थ प्रमाण रुपे स्वीकार्यु होवानो उल्लेख निबंधना शास्त्रार्थ प्रकरण (का.७) मां कर्यो छे. अर्थात् जे 'प्रमाण चतुष्टय' ना आधारे श्रीमहाप्रभुजीए पोतानुं तत्त्वदर्शन प्रस्तुत कर्यु छे तेनो मुख्य आधार श्रीमदभागवत छे. तेथी समजी शकाय छे के उपरोक्त कारिकामां बतावेला गुरु ना लक्षणोनुं हार्द शुं छे.

तेओ पोते ज निजवंश द्वारा पोतानुं 'गुरु' तरीकेनुं कर्तव्य पालन करवानुं होवाथी तेमना वंशजोमां उपरोकत गुणो 'कृष्णसेवामां परायणता, दंभादि रहितता अने भागवतनु तत्त्वग्यान होवा नो निर्देश आपे कर्यो छे. तेथीज पुष्टिसंप्रदाय मां शिष्य परंपराने बदले वंश परंपरानो स्वीकार आपे करेलो जणाय छे. कृष्णसेवापरायण आचार्य ज अनुयायीने कृष्णसेवा मां प्रवृत्त करी शके अने ते जो भागवतना तत्तवग्यानथी सुपरिचित होय तो शिष्यनी तात्विक जिग्यासाने संतोषी शके.

स्वाभाविक छे के वर्तमानमां श्रीमहाप्रभुजीना 'तत्त्वदर्शन' तेमज 'धर्मदर्शन' विशे अनुयायीओने प्रशिक्षित करवानु, तदर्थ तमने तत्त्वोपदेश, सिद्धांतोपदेश, व्यवहारोपदेश अने फलोपदेश आपवानुं उत्तरदायित्व 'गुरुद्वार' रुप वल्लभवंशज आचार्योश्रीओनुं छे. जो आचार्यश्री स्वयं कृष्णसेवा न करता होय तो सेवानी प्रकीर्णता / अनिवार्यतानो बोध तेओ अनुयायीओने न आपी शके. तेवीज रीते श्रीमहाप्रभुजीए प्रतिपादित करेल शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद नी दार्शनिक विचारधारा, जे आपश्रीए वेद, गीता, ब्रह्मसूत्रो अने भागवत - शब्दप्रमाणोनी एकवाक्यताना आधारे प्रतिपादित करी छे, अने तदंतर्गत पुष्टिमार्ग नी साधना प्रणाली प्रवर्तित करी छे, तेनु ग्यान होवुं पण अनिवार्य छे, जेथी तेओ तत्त्वबोध करावी शके.

श्रीमहाप्रभुजीए गुरुनुं त्रीजु लक्षण 'दंभादि अवगुणो थी रहित' होवानुं बताव्यु छे. आ अति महत्वनु छे. वर्तमानमां अनेक प्रकारना पाखंडो नु आचरण दृष्टिगोचर थाय छे. कहेणी अने करणीमां भेद जोवा मले छे. हकिकतमां आचार्यनी सादी व्याख्याज छे 'आचरति आचरयति च आचार्य'. जो उपदेश आपनार आचार्यनु पोतानु आचरण जे उपदेश अनुयायीने आपी रह्या होय तदनुसार न होय तो उपकारक होई शकतो नथी.

आथी समजी शकाय छे के श्रीमहाप्रभुजीए केटली दूरदर्शितापूर्वक आ संप्रदायनी आचारसंहिता घडी छे जेथी आप परोक्षमां पण पुष्टिजीवोने आमार्गमां प्रवृत्त करी तेमने भगवद् प्राप्ति करावी शके. तदर्थ वर्तमानमां वल्लभवंशज आचार्यश्रीओना उत्तरदायित्व नी गंभीरताने पण समजी शकाय छे. .... क्रमशः

...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************** ३३ *****************

'सांप्रत स्थिति' ......(चालु)......

श्रीमहाप्रभुजीए गुरुना लक्षण बतावती उपरोक्त कारिकामां पुष्टिमार्गने अनुसरवा ईच्छता अनुयायीओने अनुलक्षीने एक महत्वनो बोध आपतां आग्या करी के तेमणे योग्य गुरुनी वरणी करतां, तेवा लक्षणो गुरुमां छे के नहिं ते विशे तपास करी लेवी जोईए, जेथी आ मार्गनु अनुसरण करवा माटे साचुं मार्गदर्शन मली रहे अने ते पोताना लक्षनी प्राप्ति करी शके. आ कारिकानो मर्म समजावतां 'आवरण भंग' टीकामां श्रीपुरुषोत्तमजी लखे छे - "गुरुनी सम्यक परीक्षानी आवश्यकता नुं कारण आ मार्ग विलक्षण छे. जो परीक्षा न करवामां आवे तो जेम एक अंध पुरुषने अनुसरनारो बीजो अन्ध पुरुष घेटानी माफक अनुसरे तो बन्ने खाडामां पडे तेम एके कोईकने गुरु कर्या तेथी परीक्षा कर्या विना जो बीजो करे तो बन्नेनुं अधःपतन थाय". आ वात श्रीमहाप्रभुजीए जलभेद ग्रंथमां पण समजावी छे.

आना परथी समजी शकाय छे के जो अनुयायी श्रीमहाप्रभुजीनी आग्या - "शास्त्रं अवगत्य मनोवाग्देहैः कृष्ण सेव्यः" नी अनुसार स्वयं तेमना ग्रंथोनो अभ्यास करी सिद्धांतोथी अवगत न थाय, अने तेमना उपदेश ग्रहण न करे, तो गेरमार्गे दोराई जवानी, भ्रमित थई जवानी शक्यता रहेली छे. तेथी संप्रदायना फलथी वंचित रही जवानी अने जन्मारो वेडफाई जवानी स्थिति पण बनी शके छे.

श्रीमहाप्रभुजीए उपरोक्त गुरुना लक्षणोनो निर्देश करतां पूर्वे एक अति महत्वनो खुलासो पण कर्यो छे. तेना विशे श्रीपुरुषोत्तमजी आवरणभंग टीकामां समजावे छे के - "अत्रे सर्वनो फलमुख अधिकार नथी परंतु जे जीवो पर भगवानननी कृपा थाय तेमनी ज आ मार्गमां प्रवृत्ति थाय छे...... तेमने ज भक्तिना मुख्य फलनुं दान थाय छे..... 'भगवद् कृपा' नु परिग्यान मार्गनी रुचि परथी थाय छे. मार्गनी रुचि - भक्तिमार्गीय वेष, वचन अने आचारथी जाणी शकाय.

आथी समजी शकाय छे के पुष्टिमार्गमां प्रवेशना अने तदर्थ ब्रह्मसंबंधनी दीक्षा ग्रहण करवाना सौ कोई अधिकारी नथी. परंतु वर्तमानमां आ बाबत विशे दुर्लक्ष सेववामां आवतुं जणाय छे. केटलाक कहेवाता वैष्णवो पोताना धरना रसोईया, घाटी वगेरेने पण दीक्षा अपावता होय छे अने केटलाक आचार्यश्रीओ बेझीझक तेमने आपतां पण होय.छे. आ प्रकारना दीक्षार्थीओने न तो पुष्टिमार्गमां रुचि होय छे न महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी साथे कोई सरोकार. पुष्टिमार्गीय मंदिरोना कर्मचारियो - मुखिया, भितरीया आदीने पण औपचारिकता खातर ब्रह्मसंबंध करावातुं होय छे, जेमाना मोटाभागना पोताना ईष्ट अन्य देवताओने मानता होय छे. आ एक विपरित सांप्रत हकिकत छे.

पुष्टिमार्गमां प्रवेश प्राप्त करवा ईच्छता साचा अनुयायीओनी परीक्षा करवानो निर्देश पण श्रीमहाप्रभुजीए आप्यो छे. दीक्षार्थी जिग्यासु तेमज उपर कह्यु तेम "भगवत्कृपा युक्त' होवानी खात्री पण गुरुए करी लेवी आवश्यक छे, केमके अन्यथा जो कोई गुरु ब्रह्मसंबंध करावे तो तेणे गीतामां भगवाने करेली आग्या (गीता १८/६७) नुं उल्लंघन कर्यु कहेवाय. तेथी गुरुए पण दीक्षा आपता पूर्वे सावधानी राखवी आवश्यक छे........ क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

****************** ३४ ****************

'सांप्रत स्थिति' .... (चालु).......

प्रत्येक संप्रदाय नी माफक पुष्टि संप्रदाय मां पण 'गुरु' नुं विशेष महत्व छे. आ संप्रदायनुं फल स्वयं भगवान श्रीकृष्ण नी प्राप्ति छे. भगवाननी प्रिप्ति तो भगवान सिवाय अन्य कोई करावी शके नहिं. ते कारणथी ज श्रीकृष्णना मुखारविंद रुप श्रीमहाप्रुभुजीनो प्रादुर्भाद थयो छे. पर्ंतु अनंत काल पूर्वे भगवानथी छुटा पडेला जीवो भगवानने, पोताना स्वरुपने भूली आ संसार-चक्रमां परिभ्रमण करवाथी अनेक प्रकारना दोषोथी ग्रस्त थयेला छे. एवा दोषयुक्त होवा छतां तेमने भगवद् आग्यानुसार 'ब्रह्मसंबंध मंत्र' नी दीक्षा आपी पूनः तेमने भगवान साधे जोडवानुं सामर्थ्य आ संप्रदाय ना 'गुरु' तरीके श्रीमहाप्रभुजीनुं ज छे. तेथी तेओए अवतारकालमां तो तेमणे पोताना 'प्रमेयबल' थी अनेक जीवोनो उद्धार कर्यो छे, परंतु वर्तमानमां पण पोताना 'प्रमाणबल' थी पुष्टिजीवोनो उद्धार पोतेज निज वंशमा पोताना सामर्थथी बिराजीने करी रह्या छे. तेथी ज पोताना वंशजोमां पण तेमना द्वारा निर्दिष्ठ उपरोक्त लक्षणो धारण करवानी अनिवार्यता समजी शकाय छे.

तेने माटे श्रीवल्लभ वंशज आचार्यश्रीओ ए पण श्रीमहाप्रभुजीनी आग्या "शास्त्रं अवगत्य.....कृष्णसेव्यः" (नि. शा.प्.) मुजब वेद, गीता, भागवतादि उपरांत आपश्रीना विभिन्न प्रकीर्ण ग्रंथो - निबंध, अणुभाष्य आदिनुं गहन अध्ययन करवुं आवश्यक होय ते समजी शकाय छे. आपणे जाणीए छीए के श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगोपीनाधजी एवम् श्रीगुसांईजी प्रभुचरणे पोते भगवद् स्वरुप होवा छतां अन्य आचार्यो पासे विविध शास्त्रोनुं अध्ययन कर्यु हतुं.

परंतु कदाच वर्तमानमां आ हकिकत नी नोंध गंभीरपणे लेवामां आवती नथी. पूर्वाचार्योना ग्रंथो द्वारा तेमज अनेक अर्वाचिन आचार्योना प्रकाशित वचनामृत ना आधारे आपणे तेओश्रीनी ग्यान-समृद्धिनो परिचय मले छे, ते वचनोनी एकवाक्यतानो अनुभव थाय छे. ज्यारे आजे आनाथी विपरित परिस्थिति जोवा मले छे. सिद्धांतोना अर्थधटन माटे अनेक प्रकारना जुदा जुदा विधानो जाणवा मले छे. एकज विषयना खुलासा भिन्न भिन्न आचार्यश्रीओ द्वारा एकबीजाथी विपरित पण होय छे. सांप्रत समयनी आ समस्या गंभीर कही शकाय तेवी छे, कारणके तेने लीधे संप्रदाय अनेक वाडाओ मां वहेंचायेलो जोवा मले छे, जेनो विपरित प्रभाव अनुयायी वर्ग पड्यो छे. गयीकालनी पेढी तो आचार्योनी वाणीने श्रद्धाथी स्वीकारती हती, परंतु आजनी युवापेढी जूदा जुदा अभिप्रायोथी, कहेणी अने करणी नो भेद निहाली असमंजस नी स्थिति अनुभवे छे. आ हकिकत नकारी शकाय तेवी नथी, जेनुं सयाधान शोधवानुं दायित्व समस्त वल्लभीय सृष्टि नुं छे. क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** ३५ ****************

'सांप्रत स्थिति' ......(चालु) ....

श्रीमहाप्रभुजी ए तत्कालिन वेद एवम् अन्य आचार्यो द्वारा प्रवर्तित भक्तिमार्ग थी विलक्षण प्रेमलक्षणा 'पुष्टिभक्ति' नो मार्ग, 'वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो- भागवत' ए चार भगवद् शास्त्रो, जेने 'प्रमाण चतुष्टय' कहेवाय छे, तेनी एकवाक्यता ना आधारे प्रस्थापित करी पोताना जीवनना एकवीश वर्ष त्रण त्रण वखत खुल्ला चरणोथी समग्र भारतमां परिभ्रमण करी, अनेक शास्त्रग्य विद्वानो, आचार्यो साथे शास्त्रार्थ करी दृढतापूर्वक पोताना विशिष्ट मत - "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" ने प्रतिपादित करी, स्पष्टपणे लोकोने समजाव्यु के 'हाल कलियुगमां ज्यारे सर्वे मनुष्यो कालना प्रभावथी वेदाग्या विरुद्ध आचरण करनारा थई गया छे, स्वाध्यायादि क्रियाओ थी रहित छे, आचारथी बहिर्मुख थयेला छे, जेओ स्वतः दुष्ट छे तेओने धर्म सिद्धि माटे आवश्यक देशकालादि पदार्थो शुद्ध नही रही जतां, जीवोना उद्धारनो मात्र ने मात्र श्रीमद्भागवतमार्गे भगवान श्रीकृष्णनुं भजन ज होई शके छे. (निबंध - स.नि.प्र.- का.२११)

आज हकिकतने आपश्रीए 'कृष्णाश्रय' ग्रंथ मां वधु स्पष्टताथी रजु करी केवल भगवान श्रीकृष्णनी शरणागति नो उपदेश आप्यो छे. 'विवेकधैर्याश्रय ग्रंथमा पुष्टिजीवोए ज नहिं जीव मात्रे ग्रहण करवा जेवा विवेक, धैर्य अने आश्रय ना स्वरुपना सर्व पासाओनी चर्चा करी छे.

'भक्ति' एटले केवल भगवाननी पूजा अथवा उपासना ज नहिं परंतु ते शब्दना उंडा रहस्यने निबंध (शा. प्र. ४२) मां उजागर करतां स्पष्टता करी छे के ते मात्र भगवान प्रत्ये स्नेह ज नथी परंतु भगवानना माहात्म्यग्याननी पण अनिवार्यतः आवश्यकता छे. भगवाननुं माहात्म्यग्यान त्यारेज थई शके ज्यारे तेमना 'सच्चिदानद' स्वरुपने यथार्थ रुपे समझीए, आपणा पोताना वास्तविक स्वरुपने अने आपणा भगवान साथेना संबंधने जाणीये, तेमज कृष्णना ब्रह्म, परमात्मा, भगवान होवाना पासा नो भेद पामीए. अने आने माटेज श्रीमहाप्रभुजीए 'कृष्ण सेवा' नी पूर्वाश्यकता तरीके "शास्त्रं अवगत्य" नी आग्या करी छे (शा. प्रकरण).

तदर्थ निबंध, अणुभाष्य ईत्यादि ग्रंथोनुं तलस्पर्शी अध्ययन करवुं गुरुद्वार वल्लभवंशज आचार्यश्रीओ माटे आवश्यक गणाय. श्रीमद्भागवत सर्व शास्त्रोना सार रुप होई अने तेना रहस्यने आपश्रीए सुबोधिनीजीमां प्रकट कर्यु होवाथी, तेनु मननपूर्वक अध्ययन करवुं आवश्यक गणाय. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी 'श्रीभागवत तत्त्वग्यता' ने गुरुना आवश्यक लक्षणोमां एक बताव्यु छे. केमके गुरु त्यारेज अनुयायिओने श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धांतिक पक्षने यथार्थ रुपे समजावी शके. जे कार्य श्रीआचार्यचरणे एकलाए कर्युं ते वर्तमानमां मोटी संख्यामां बिराजता श्रीवल्लभकुल आचार्यो, पोते ते ग्रंथोनो विधिवत अभ्यास करी जो तेनाथी अनुयायी वर्गने शिक्षित करे तो तेओ साचा अर्थमां पुष्टिमार्गना हार्दने समजी तेने अनुसरी शके.

परंतु वर्तमानमां वास्तविकता जुदी ज दृश्यमान थाय छे. आजे अनेक आचार्यश्रीओ ए कथा-प्रवचननो उपक्रम अपनाव्यो छे, जेमां मोटाभागे अडधा दिवसनी संगीतमय भागवत कथा अथवा श्रीनाथ चरित्रामृत, ईत्यादिनु मनोरंजनात्मक आयोजन थतुं जोवा मले छे. भाग्येज षोडश ग्रथो तेमज निबंध आदि गथोना प्रशिक्षण नो उपक्रम जोवा मले छे. तेनुं ए पण कारण छे के आचार्य बालको स्वयं पण विद्वानो पासेथी विधिवत् ए विशिष्ट ग्रथोना अध्ययन करवा प्रत्ये उदासिन होय छे.

परिणाम स्वरुप कदाच भाव -भावना विशे अनुयायिने जाणकारी प्राप्त थती होय, अथवा संगीतना माध्यमथी क्षणिक आनंदनो अहेसास थतो होय, परंतु सेवादि क्रियामा निष्ठा जगावी शके तेवुं ग्यान तेने भाग्येज प्राप्त थाय छे. तेथी जेम स्वयं श्रीमहाप्रभुजी आग्या करे छे तेम निष्ठाना अभावमां तेने फलप्राप्ति संदिग्ध ज होय. (नि. शा. प्र. का १८). आ विशे संप्रदाये गंभीरतापूर्वक विचारवुं आवश्यक छे.

क्रमशः........ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

****************** ३६ ******************

'सांप्रत स्थिति' ......(चालु) ....

श्रीमहाप्रभुजीए पुष्टिसंप्रदायने पोताना अनवतार कालमां पुष्टिजीवोना उद्धार माटे प्रवर्तित करवा अन्य संप्रदायोनी शिष्य परंपराथी विपरित 'वंश परंपरा' नो स्वीकार कर्यो होवानुं प्रमाण तेमणे श्रीदामोदरदासजीने करेली आग्या के "श्रीगुसांईजीने मारुं ज स्वरुप जाण", उपरथी स्पष्टपणे समजी शकाय छे. अनवतारकालमां पण पोतेज निज वंशमां बिराजी भगवदाग्यानुसार सर्वकालमां दैवीजीवोना उद्धार नुं उत्तरदायित्व निभाववा माटेनी आपश्रीनी योजनानो निर्देश आथी मले छे.

पोते पोताना 'गुरुकार्य' ने पार पाडवा आ संप्रदायना अनुयायीओने यथार्थ रुपे तत्त्वनो, सिद्धांतोनो, तेना व्यवहारिक आचरणनो तेमज प्राप्त थता फल नो बोध आपी शके ते हेतुथी पोताना वंशजोमां चोक्कस लक्षणो होवानी आवश्यकता नो निर्देश तेमणे उपरोक्त निबंधना सर्वनिर्णय प्रकरण (का.२२७) मां करेलो जणाय छे, केमके पोते 'वंश परंपरा' नो स्वीकार करलो होई तेमणे आवा लक्षणो पोताना वंशजोमां होवा जरुरी छे, तेवी आपश्रीनी अपेक्षानो संकेत मले छे.

आम छतां कालनो प्रभाव विपरित परिस्थिति सरजी शके छे तेनो अंदाज पण, आप सर्वग्य होवाना कारणे आव्यो ज हशे. आनुं प्रमाण पण आपना अंतिम ग्रंथ 'शिक्षा श्लोकी' मां मले छे. आपश्रीनी संन्यस्थ अवस्थामां कहेला वचनो पुष्टिसंप्रदायनी 'बिंदु सृष्टि' तथा 'नाद सृष्टि' बन्नेने अनुलक्षीने कहेवामां आवेलां जणाय छे, कारणके आपश्रीए "युयं" शब्दनो प्रयोग कर्यो छे. श्रीगोपीनाथजी एवम् श्रीगुसांईजी जेवा भगवद् स्वरुपोने तेमज आपना अनन्य सेवक दामोदरदास हरसानिजी ने पण आप कहि रह्या छे के - "जो बहिर्मुख थशो तो काल तमारु भक्षण करघ जशे !". आथी स्पष्टतया समजी शकाय छे के आपश्रीना स्वधाम पधारी गया पछी केवी परिस्थिति उद्भवी शके छे तेनो अंदाज होवाना कारणे आपश्रीए त्यारे आ वचनो पोताना वंशजो तेमज समस्त सेवकोने उद्देशीने कह्या होवी जोईए.

तदर्थ उपरोक्त कारिकानो आवरणभंग टीका मां खुलासो करतां श्रीपुरुषोत्तमजी कहे छे - "परंतु आ प्रकारना लक्षणवाला गुरु कलियुगमां दुर्लभ छे. कलियुग बलिष्ट होवाथी हवे थनारा गुरुओमां आ प्रकारना लक्षणोनो अभाव थशे - आवा लक्षणो वाला गुरु आधुनिक समयमां प्राप्त न पण थाय - एवो विचार करी श्रीमदाचार्यचरण पोताने विशे ज आ भगवन्मार्गना गुरुत्व नुं नियमन करतां कहे छे (गुजराती अनुवाद - पेज ५८) -

"तदभावे स्वयं वापि मूर्तिं कृत्वा हरेः कचित्, परिचर्या सदा कुर्यात् तद्रुपं तत्र च स्थितम्, साकार व्यपकत्वात् वाच्य मन्त्रस्यापि विधानतः" (स.नि.प्र.२२८)

अर्थात् - 'अथवा तेवा गुरुना अभावमां पोते जाते ज कोईक स्थले हरिनी मूर्ति करीने पण सदा भगवाननी परिचर्या करवी. मूर्ति तद्रूप - हरिनुं रुप छे. व्यापक तथा साकार होवाथी, तेमज वली मंत्रना विधान बले तत्र रहेलुं छे.

श्रीमहाप्रभुजी "कृष्णसेवा सदा कार्या" ने 'स्वसिद्धांत' कहे छे. (सि.मु.). तेथी आपश्रीनी उपरोक्त

आग्या समजवी मुश्केल नथी. कोईपण संजोगोमां मुख्यता 'कृष्ण सेवा नी छे'. गुरु रुपे श्रीमहाप्रभुजी तेमना ग्रंथोमां 'वांगमय स्वरुपे' सदा बिराजे ज छे. तेथी तेवी विपरित परिस्थितिमां श्रीमहाप्रभुजीनी उपरोक्त आग्या सारगर्भित छे, जे जाणवी आवश्यक छे. मूलतः आपश्रीज आ संप्रदाय ना गुरु छे अने प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्षमां आप विद्यमान छे ज .... क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

****************** ३७ ****************

'सांप्रत स्थिति' ....(चालु).......

उपरोक्त वचनोथी स्पष्टतया समजी शकाय छे के पुष्टिमार्गमां शास्वत रुपे "गुरु" ना रुपमां श्रीमहाप्रभुजी ज (एवम् तेमना ज वचनानुसार श्रीगुसांईजी) बिराजे छे. तेमना सदृश न कोई हता, न छे, न थशे, तेम स्वयं श्रीगुसांईजी ना वचन छे - "श्रीमद्वल्लभ नामधेयो सदृशं भावी न भूतोस्त्यपि" (सप्तश्लोकी) . आवीज स्पष्टता श्रीहरिरायजीए पण शिक्षापत्रमां अनेक स्थाने करी छे. तदर्थ एवी मान्यता के वल्लभकुलमां सर्वे साक्षात् श्रीवल्लभाचार्यजी ज बिराजे छे, ते साची होय तेम जणातुं नथी. ते कदाच अग्यान वश होई शके अथवा स्थापित हितो द्वारा एवो दुष्प्रचार करवामां आवी रह्यो छे, केमके एवी अनेक पत्रिकाओ जोवा मले छे, जेमां वर्तमान आचार्यश्री ना नाम आगल 'साक्षात् श्रीवल्लभाचार्यजी स्वरुप' अथवा 'साक्षात् श्रीगुसांईजी स्वरुप' विशेषणो लगाडवामां आवे छे.

तेम छतां आपणे समजवुं जोईए के श्रीमहाप्रभुजी वर्तमानमां श्रीमहाप्रभुजी गुरुद्वार रुप निजकुलमें बिराजीने परोक्षमां दीक्षा आदि गुरु कार्य करे छे, तदर्थ अनुयायी वर्गे पोताना दीक्षादाता वल्लभकुल आचार्यश्रीमां 'श्रीवल्लभवत् ' भाव राखी तेमना दर्शन - चरणस्पर्श आदि करवा जोईए, अन्यथा भाव लाववो जोईए नही. माटे ज आपश्री द्वारा निर्दिष्ट गुरु ना लक्षणो धारण करवानुं उत्तरदायित्व स्वयं आचार्य बालकनुं छे, कारणके तेमना ज द्वारा श्रीमहाप्रभुजी आपणने तत्वबोध, सिद्धांतोनी समझ, साधना प्रणाली तेमज फलप्राप्ति वीशे उपदेश आपे छे.

आनाथी एक वात स्पष्ट थाय छे के जो श्रीमदाचार्यचरण निजकुलमां बिराजी अनुयायी वर्गने पोताना सिद्धांतोनुं उद्बोधन करतां होय तो, ते कोईपण आचार्यश्रीना माध्यमथी होय, ते तेमना पोताना विचारोथी असंगत न होई शके. तदर्थ प्रत्येक आचार्यश्रीनी वाणी व्यवहार, आग्याओ आपश्रीना सिद्धांतोथी सुसंगतज होवी जरुरी छे, ते क्यारेय विपरित होई न शके. अने जो कोई आचार्यश्रीनी वाणी - व्यवहार श्रीमहाप्रभुजीना मूलभूत सिद्धांतो, आग्याओथी विषम अथवा अलग अलग जणाय तो तेमां कांईक भेद होवानी संभावना छे. श्रीमहाप्रभुजी पोताना विचारोथी विपरित आग्या क्यारेय न करे अथवा जुदा जुदा आचार्यश्रीओ द्वारा विभिन्न मत प्रदर्शित न ज करे !.

परंतु वर्तमानमां अनेक प्रकारनी सांप्रदायिक गतिविधीयो दृश्यमान थाय छे, अनेक एवा आयोजनो आयोजीत करवामां आवतां होय छे, एवी अनेक प्रकारनी आग्याओ करवामां आवती होय छे, जे उबलक दृष्टि थी (prima faci) ज पुष्टिमार्गिय विचारधाराने अनुरुप न होय, जेनी कार्य पद्धति श्रीमहाप्रभुजी / श्रीगुसांईजी द्वारा प्रवर्तित साधनाप्रणालीने सुसंगत न होय, तेम स्पष्टपणे जाणी शकाय. परंतु सामान्य अनुयायीनी मात्र पोताना दीक्षादाताने ज गुरु मानवानी मानसिकता होय छे (केटलाक तो श्रीमहाप्रभुजी नी गुरु रुपे

विशिष्टता थी ज अनभीग्य होय छे), तेथी मात्र दीक्षादाता आचार्यश्रीनी वाणीनेज प्रमाण रुपे स्वीकारी लेता होय छे. तेज साची होवानो हठाग्रह पण राखता होय छे.

आवी स्थितिना परिणामे, केमके अनेक बाबतो विशे अलग अलग आचार्यश्रीओना अभिप्रायो / आग्याओ जुदी जुदी प्राप्त थती होवाथी, गो. आचार्यश्रीओमां पण क्यांक वैमनस्य के कटुता सतह पर आवती देखाय छे, तेमज अनुयायी वर्ग पण जुदा जुदा वाडाओमां वहेंचायेलो जणाय छे. आ संप्रदायनी समग्रता माटे एक घातक परिस्थिती छे. आ आजनी वास्तविक हकिकत छे, जेना विशे गंभीरतापूर्वक विचार करवानी आवश्यकता छे.

अन्य आचार्योनी दार्शनिक विचारधाराना परिपेक्ष्य मां जो तटस्थता पूर्वक विचार करीए तो तेनी गहनता, तेना द्वारा संभव सर्वोच्च फलप्राप्ति (sumam bonam) अतुल्य छे. परंतु कदाच आपणामांना धणाने तेनी सर्वोच्चतानी जाण ज नहिं होय, अने मात्र गाडरीया प्रवाहनी माफक पुष्टिमार्गने अनुसरी रह्या छे. पुष्टिसंप्रदायनी यथार्थता अने सार्थकता माटे आ विशे चिंतनपूर्वक सहियारो प्रयास करवानी आवश्यक्ता ने नजर अंदाज करवी जोईए नहीं. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

***************** ३८ *****************

'सांप्रत स्थिति' ....(चालु)........

पुष्टिमार्ग ना स्थापक तेमज मूल प्रवर्तक श्रीमहाप्रभुजी होवाथी, तेमज ते आपश्रीए तत्कालिन प्रवर्तित अन्य दार्शनिक विचारधाराओ थी विलक्षण हेतु तेमज दृष्टिकोण थी, सर्व संम्मत भगवद्.शास्त्रोना निष्कर्ष रुपे, शुद्धाद्वैत मत तरीके प्रतिपादित कर्यो छे, अने तदंतर्गत तेना सिद्धांतो धड्या छे तथा तेने अनुरुप साधना प्रणालीनो निर्देश आप्यो छे. स्वाभाविक छे के श्रीमहाप्रमुजी साक्षात् भगवदावतार छे, तेथी सर्वग्य पण होय ज. तेथी आपश्री पांचशो वर्ष पछीना समयनी परिस्थिति थी अनभिग्य होय तेम मानी शकाय नहिं. तेमना सैद्धांतिक उपदेशो सर्वदेशीय अने सर्वकालिन ज होय, जे तेमना ग्रथोनुं झीणवटभर्यु अध्ययन करतां स्पष्टरुपे जाणी शकाय छे.

कदाच पाछला पांचशो वर्षनी वैग्यानिक प्रगतिना कारणे अनेक प्रकारनी सुविधाओ उपलब्ध थयेल होवाथी मानव जीवन ना अनेक पहेलुओमा, रहेणी- करणीमांं, परिवर्तन अवश्य आवेलुं छे. तदर्थ साधना प्रणालीनी केटलिक क्रियाओ मां फेरबदल करवानी जरुरत नो ईन्कार करी शकाय नहीं. तेवा आवश्यक फेरफारोनो निर्णय पण समग्र पासाओनो संपुर्णपणे विचार - चर्चा विचारणा करी, प्रबुद्ध आचार्यश्रीओ द्वारा सामुहिक रुपे लेवावो जोईए, जेथी संप्रदाय ना मूलभूत मालखाने क्षति थाय नहीं. तेमछतां श्रीमहाप्रभुजीए जे सैद्धांतिक सत्योने तारवेला छे, ते तो सनातन अने शाश्वत ज छे, जे क्यारेय बदलाई शके नहिं, अने तेथी तेमां कोई परिवर्तननो अवकाश होई शके नहि. ते बंधारणना मूलभूत सिद्धांतोनी माफक क्यारेय बदली शकाता नथी, अन्यथा तेनुं स्वरुपत्र मूल विचारधाराथी सुसंगत ज नहिं रहि जाय !

उपरोकत कारणथी संप्रदायना सर्वे उपक्रमो अने गतिविधियो, आयोजनो, उपदेशो, दीशा-निर्देशो सुनियंत्रित होवा जरुरी छे. परंतु आजे अनेक मनघडंत आयोजनो प्रचलित थतां होय छे. अनेक विषयो पर विभिन्न आचार्यश्रीओ द्वारा जुदा जुदा प्रकारना आयोजनो करवामां आवता होय छे, विधानो करवामां आवतां

होय छे, तेमज तद्विषयक आग्याओ आपवामां आवती होय छे, जे संप्रदायना मालखाने, तेना मूलभूत हेतूने नष्ट करनार सिद्ध थई शके छे. वास्तवमां संप्रदायनी सर्वे गतिविधियो, श्रीमहाप्रभुजीनी विचारधाराने सुसंगत होवी अनिवार्य गणाय, केमके वर्तमान आचार्यश्रीओ नुं उत्तरदायत्व संप्रदायनी फ्रेमवर्क ने सुरक्षित राखवानुं छे अने तेना अंतर्गत तत्वोपदेश, अने.सिद्धांतोपदेश करवानो होय.छै, जेथी तेनी फलदायीता अकबंध रहे.

परंतु ए वास्तविकता छे के वर्तमानमां एवा अनेक कार्यक्रमो - भागवत-सप्ताहो, विविध सत्संग ना उपक्रमो, मनोरथो आयोजीत थतां होय छे जेनो उद्देश्य श्री महाप्रभुजीए कृष्णाश्रयमां निर्देश करेल 'लाभपूजार्थ हेतु होवानुं स्पष्टपणे देखाई आवे छे. विपुल मात्रामां अनुयायी वर्ग आवा उपक्रमोमां अग्यानवश अथवा अंधश्रद्धाने कारणेके, तेमना पोताना कोई क्षुल्लक स्वार्थवश

जोडातो होय छे, केमके ग्रंथोना अभ्यासना अभावमां तेमना माटे साचाखोटानो विवेक जालवलवो मुश्केल होय छे.

. आ हकिकतने परम विदुषी नि.ली. गो. पु.पा श्री ईन्दिराबेटिजी महोदया ना प्रकाशित वचनामृत मां उद् गार - "आर वी फोलोईंग पुष्टिमार्ग ओर समथींग एल्स......" (जन्मभुमि, मुंबई - ६.११.२०१२) ज उजागर करे छे. आ एक गंभिर परिस्थिति छे जेनो उकेल समग्र वल्लभीय सृष्टिए - तेना बन्ने अंग - बिंदूसृष्टि अने नाद सृष्टिए साथे मली लाववानी आवश्यक्ता छे. नादसृष्टिनु उत्तरदायीत्व पण समान रुपथी छे, केमके श्रीमहाप्रभुजीए श्रीहरसानीजीना माध्यमथी निर्देश कर्यो छे - "दमला ये मार्ग तेरे लीये प्रकट कीया है !. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

*************** ३९ *****************

'सांप्रत स्थिति' ....(चालु) ....

वर्तमानमां पुष्टिसंप्रदायमां एक बदलाव जोवा मली रह्यो छे, जेमां तेना मूल प्रवर्तक श्रीमहाप्रभुजी द्वारा स्थापित मूल्योमां परिवर्तन आवी रहेलुं देखाय छे. ए वात साची छे के समस्त दुनिया वैग्यानिक क्रांतिना कारणे, तेमज तेना प्रभावना कारणे भोतिकवादी विचारधारा पर वधु अभिमुख थई रही छे, जेना परिणामे सामाजीक मूल्योमां परिवर्तन आव्यु छे. विग्यांन नी प्रगतिना कारणे अनेक सुख-सुविधाओ उपल्ध छे जे जयारे आ संप्रदारनी आचार प्रणाली धडाई हशे त्यारे न हती. आजे आपणे बदलायेल परिस्थितिमांज जीवन जीववानु छे, अने तेथी तदनुसार आपणा सांप्रदायिक जीवनने पण तेने अनुरुप बनाववुं आवश्यक छे.

परंतु आपणे ए न भूलवुं जोईए के श्रीमहाप्रभुजीना प्राकट्यनो हेतु वर्तमान मां जीवता दैवीजीवो जे सहस्त्र परिवत्सरथी भगवानथी विखुटा पडी भवसागरमां अटवायेला हतां, तेमनो उद्धार करवानो हतो / छे. तेमां पांचशो वर्षनो काल insignificant छे. तेथी एम कहेवुं के तेमना समयमां जे जरुरी हतुं ते आजे irrelavant छे, ते तेमनी भगवद्-रुपता, तेमनी सर्वग्यता पर प्रश्न चिन्ह मुके छे, जे अप्रस्तुत छे, विशेषतः तेमना द्वारा, जेओ तेमना वंशज होवानो अथवा अनुयायी होवानो दावो करतां होय ! ज्यारे आपणे जो आवो अभिप्राय धरावता होईए तो वास्तवमां आपणे आपश्रीनी विचारधारा अथवा तेना मर्मने ग्रहण करवामां असमर्थ छीए तेम मानवुं पडशे.

हकिकत मां जो आपणे श्रीमहाप्रभुजीए जे 'फल'नी प्राप्ति पुष्टिजीवनुं गंतव्य होवानी समझ

आपणने (जो आपणे पुष्टिजीव होवानी मान्यता धरावता होईए तो) आपी छे, "भगवानेव फलम्" नो निर्देश कर्यो छे, ते मात्र भगवान कृष्णनी स्वयंनी कृपाथी ज प्राप्त थई शके छे. कया जीव पर क्यारे कृपा करवी ते तो श्रीकृष्णनो पोतानो ज स्वतंत्र एकाधिकार होई शके, परंतु एक पुष्टिजीव तरीके आपणुं शुं कर्तव्य होवुं जोईए, अने ते पण ज्यारे आपणे कलियुग ना दुष्प्रभावथी ग्रसित होईए त्यारे, तेमणे एक आदर्श गुरु तरीके तद्विषयक तेमना ग्रंथो द्वारा स्पष्ट शब्दोमां आग्या करी छे. हा, आग्या !, मात्र उपदेश नहिं,
केमके आपणे तेमना सेवक होवानो दावो करीए छीए !

श्रीमहाप्रभुजी निबंध ग्रंथ (स.नि.प्र. - का.२११) मां वर्तमान युगनी परिस्थिति (आजथी पांचशो वर्ष पूर्वे ज) ने अनुलक्षीने समजावे छे के भले शास्त्रोमां अनेक प्रकारना मार्गोनो निर्देश करवामां आव्यो होय, विविध उपायो बतावववामां आव्या होय, परंतु ज्यारे ते समग्र व्यवस्था पडी भागी होय (collapse थई गई होय) त्यारे मात्र ने मात्र श्रीकृष्णनी बिनशरती शरणागति (प्रपत्ति) अने सेवात्मिका भक्ति ज विकल्प होई शके छे. तेथी ज आपश्री आग्या करे छे - "कृष्ण एव गतिर्मम", "कृष्णसेवा सदा कार्या", "सर्वदा सर्वभावेन भजनियो व्रजाधिपः", वगेरे.

Mind it !, आ पुष्टिपथ पर चालवा ईच्छता पथिको ने आग्या छे, केमके तेओ तेमनो ज उद्धार करवा पधार्या छे ! आजे आपणे आ वात विसरी गया छीए, अने आवा समर्थ गुरु होवा छतां आमतेम भटकी रह्या छीए अने मनस्वी प्रमाणे तेमनी आग्याओनुं अर्थधटन करी पोताने अनुकुल लागे तेम आचरण करी रह्या छीए.

जो श्रीमहाप्रभुजीना निर्देश नो यथार्थ विचार करीए तो तेमना उपदेश / आदेशनो मर्म छे - 'समर्पित जीवन', जेना दृष्टांत आपणने ८४ - २५२ भगवदीयोनी वार्तामांथी प्राप्त थाय छे. तेमां नथी आवश्यक्ता संपत्तिनी, समृद्धिनी के सूविधाओनी !. आपणी पासे जे पदार्थो सहज रीते उपलब्ध छे, तेनो आपणा पोताना कृष्ण माटे विनियोग करी कृष्ण साथैनुं 'सहजीवन' तेज छे - 'समर्पित जीवन'. न तो तेने माटे गृहस्थजीवननो त्याग करवानी आवश्यकता, न संन्यासी बनवानी, न वैराग्यनी. आपणे दैवयोगथी प्राप्त थयेला आपणा जीवनने सामान्य रीते व्यतित करतां पाली शकाय तेवो कोई अन्य मार्ग नो शुं विचार करी शकिये छीए !.

अने तेनी विशेषता ! कोई कल्पी न शके !. जेने प्राप्त करवा आपणे बधी गडमथल करता होईए - मंत्र, तंत्र, यग्य-यागादि, दर्शन, यात्रा वगेरे वगेरे - तेने तो आपणा सक्षम गुरु पहेले दिवसथी ज आपणा धरमां पधरावी दे. आपणे तो मात्र आपणुं सर्वस्व तेने सोंपी तेमना आश्रये आनंदपूर्वक आपणा परिवार साथे जीवन व्यतित करवानु !

तेम छतां आपणे मंदिरो ज नहिं, दरगाहोमां, गुरुद्वारोमां, कहेवाता संत माहात्माओनी निश्रामां वगेरे स्थानो मां ठोकर खाई रह्या छीए ! कोण समझावे आपणने ! ....(चालु) .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

**************** ४० *****************

'सांप्रत स्थिति' ....(चालु).......

वर्तमान समयमां (कहेवाता) वैष्णवोनो एक एवो वर्ग पण जोवा मले छे जेओ मूलतः पुष्टिमार्गीय

वैष्णव परिवारोथी जोडायेला होवाथी पोते पुष्टिमार्गीय होवानो दंभ आचरता होय छे, परंतु पुष्टिमार्गना हार्दथी अपरिचित होवाना कारणे तेमज आजनी भौतिकवादी विचारधाराना प्रभावने लीधे श्रीमहाप्रभुजीनी दार्शनिक विचारधाराने के प्रणालीने वर्तमानमां अप्रस्तुत गणावी तेमां आधुनिक बदलाव ईच्छता होय छे. तेओ आचार - विचारनी केटलीक परंपरा के पद्धतिनेज पडकारता होय छे.

केटलाक वली 'सर्वधर्म समभाव' ना आंचल नीचे अन्य देवोनी उपासना के विभिन्न धार्मिक आस्था मां विश्वास धरावता होवा छतां तेमना वडिलो परंपरागत पुष्टिधर्मनुं पालन करतां होवाथी संप्रदाय साथे औपचारिक रीते जोडायेल रहेवा ईच्छता होय छे. तेमांना केटलाक आर्थिक सद्धरताना अथवा सामाजीक मोभाना कारणे, संप्रदाय ना उपक्रमोमां पण विशिष्ठ स्थान भोगवता होय छे. केटलाक पोताना राजस-भावने अथवा अहं ने पोसवा सांप्रदायिक आयोजनोमां सहभागी बनता होय छे, स्वयं छप्पनभोग आदी मनोरथो करावता होय छे. आ प्रकारनी व्यक्तिओ पासेथी आर्थिक लाभ प्राप्त करवा माटे क्यारेक तेमने तेमना देवी द्रव्य (!) ना विनियोग करावबा माटे प्रोत्साहित करवामा पण आवता जोवा मले छे. आ रीते अनेक प्रकारना अनेक परिबलो ना प्रभावने कारणे वर्तमानमां संप्रदायना मूल स्वरुप मां विकृत परिवर्तन थई रहेलुं जोई शकाय छे. कदाच पहेलां करतां अनेक मंदिरो देश- विदेशमां स्थपाई रह्या छे, विविध सप्ताहो - प्रवचनो, सार्वजनीक मनोरथो आयोजीत थई रह्या छे. तेनाथी एवो आभास उत्पन्न थाय छे के पुष्टिसंप्रदाय विस्तरित थई रह्यो छे, परंतु तेनी वास्तवीकता नुं आकलन करवुं अत्यंत आवश्यक छे.

पुष्टिमार्ग जेवो स्वयं भगवदावतार श्रीमहाप्रभुजी द्वारा वेदादि शास्त्रोना प्रमाणोना आधारे स्थापित / प्रवर्तित यथार्थ संप्रदाय न तो अंधश्रद्धाथी चाली शके, न कोई मनघडंत उपक्रमो द्वारा, कारणके तेनो पायो स्वयं भगवानना अनकानेक वचनो छे. श्रीमहाप्रभुजीए आ वातनो स्पष्ट खुलासो करतां निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां करतां कह्यु छे - "वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानी व्याससूत्राणि चैव हि, समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्". जो आ संप्रदायना प्रतिपादक स्वयं आवो दावो करतां होय तो आ संप्रदायनुं अनुसरण करवा तेनाथी विपरित उपदेश आपवानो, विचारो प्रकट करवानो के विरुद्ध आचरण करवानो 'पुष्टिमार्ग' ना ज नामे कोईने पण हक्क होई शकतो नथी.

तदर्थ जेमणे श्रीमहाप्रभुजीने गुरु रुपे स्वीकारी आ उच्चतम संप्रदायने अनुसरी पोताना उद्धारनी कामना होय तेमणे वर्तमान परिस्थितिमां खुबज सावधान रहेवानी आवश्कता छे, जे परिस्थिति नूं वर्णन आपश्रीए कृष्णाश्रय स्तोत्र मां कर्यु छे. .... (चालु) .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्रत स्थिति, समाधान"

****************** ४१ ****************

'सांप्रत स्थिति' .... (चालु) ....

वर्तमान समयमां विशेषतः सावधानी राखवी जरुरी एटला माटे छे के इन्टरनेटना युगमां प्रत्येक बाबतनी माहिती सोशियल मीडियामां त्वरित उपलब्ध थाय छे जेना द्वारा खास करीने युवापेढी भ्रमित थया विना रही शके नहिं. अनेक विपरित घटनाओ थी आपणे तेना द्वारा अवगत थता होइए छे जेना कारणे जो आपणी श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धांतोमां विश्वास दृढ थयेलो न होय तो सहजपणे विचलित थया वगर रहेवाय नहीं. त्यारे आपणे जे उपदेश आचार्योश्रीओना श्रीमुखेथी श्रवण करतां होईए अने क्यारेक तेमना व्यवहार -

आचरण मां भेद देखाय त्यारे गुरुद्वार रुप आचार्यश्रीनी वाणीने अनुसरवी मुश्केल जणाय.

उपरोक्त 'सर्वधर्म समभाव' ना विशाल दृष्टिकोण ने अपनाववा थोडा वर्ष पूर्वे एक सुदुर पराना जैन उपाश्रयमां केटलाक कहेवाता वैष्णवो द्वारा अमुक श्रीवल्लभकुल आचार्यश्रीओ ना वरद हस्ते एक जैनमुनीश्रीना पुतलानी बाजुमां ज आपणा परम आराध्य भगवान श्रीकृष्णनी आदमकद प्रतिमानी 'भाव प्रतिष्ठा' करवामां आवी हती. त्यारे जैनमुनीए वल्लभकुल आचार्यो समक्ष ज श्रीकृष्णने तेमनी मान्यता मूजब भविष्यना 'भगवंत' तरीके बिरदाव्या हतां. तेवीज रीते ब्रह्मसंबंध जेवी संप्रदायनी गूढ पवित्र प्रक्रिया साथे चेडा करनार कथाकार नो 'गुरुपूर्णिमा' उत्सव आपणी प्रधान पीठनी व्यवस्थाना जवाबदार सद्गृहस्थ ना निवासे योजायो हतो. आपणे अनेक आचार्यश्रीओने महादेवजीना देवालयमां जाहेर पूजन करतां, गणेशजी आदि देवोनी आरती उतारता, अथवा दरगाहमां चादर चढावतां सोशियल मिडीयामां जोता होईए छीए. तदर्थ तेमनामां श्रीवल्लभ अंश विद्यमान होवाना कारणे कदाच तेमना एवा सामर्थ्य होय ते विषयमां शंका करवानो आशय नथी, के न कोई व्यक्तिविशेषनी निंदा के टिका करवानो आशय छे, परंतु मुख्य बाबत - ज्यां कहेणी अने करणी मां भेद वर्तातो होय त्यां आवा दृश्यो संप्रदायना अनुयायी नी श्रद्धाने अने तदर्थ समग्र संप्रदायनी श्रीकृष्णनी अनन्य भक्ति अने शरणागतिनी विचारधाराने अवश्य धक्को पहोंचाडी शके छे, ते हकिकत छे.

वास्तवमां जो आचार्यश्रीओनी वाणी अने व्यवहारमां एकरुपता प्रकट थती न होय तो तेमना आचार्यत्व उपर ज प्रश्नार्थ चिन्ह लागी शके छे, कारणके आचार्य तेंनेज कहेवाय जेओ पोताना सिद्धांतोनुं स्वयम् आचरण करी अनुयायीओ पासे तदनुसार आचरण करावे. श्रीमहाप्रभुजीए जे सिद्धांतो प्रतिपादित करी तेनो उपदेश पोताना ग्रंथो द्वारा आप्यो छे तेनुं पोते अक्षरसः पालन कर्यु छे.

'सर्वधर्म समभाव' नी उद्दात भावनानो विचार करीए तो तेनो आशय अन्य धर्मनो अनादर करवानो के तेने निचो देखाडवानो प्रयास न करवो जोईए ते छे. नही के तेने अपनाववो. आ विशे श्रीमहाप्रभुजी जेवा उदार विचारो शायद ज कोई अन्य महापुरुषे व्यक्त कर्या हशे. आपणे जाणीये छीए के परम तत्त्व ना स्वरुप वीशे अनेक विचारधाराओ प्रवर्ते छे. सौ कोई पोतानी रीते तेने समजावे छे. श्रीमहाप्रभुजी समजावे छे के शब्दब्रह्म रुप वाणी केवल 'एकमेवाद्वितियम्' ब्रह्मनुं ज निरुपण करे छे. तेथी वाणी द्वारा जे कांई कहेवामां आवे छे ते परम तत्त्व ब्रह्म विषयक ज होई शके छे, जेने बधा पोतानी समजनी मर्यादामां समजावे छे. अर्थात् तेने असत्य नहीं पण अर्धसत्य कहेवाय. तेथीज आपश्री निबंधमां कहे छे - "सर्ववादानवसरं नानावादानुरोधित" (शा प्र. ७०)

तेम छतां तेमणे अनेक शास्त्रीय प्रमाणोथी श्रीकृष्ण ज परब्रह्म परमात्मा होवानुं प्रतिपादन करी एक मात्र श्रीकृष्णनी ज अनन्य भक्ति एवम् शरणागति नो उपदेश आप्यो छे, कारणके आपणुं गंतव्य ज श्रीकृष्ण छे. तेथी पुष्टिसंप्रदायना समस्त अनुयायीओ माटे तेमनो उपदेश ज अनुसरणीय छे.

.... क्रमशः ...... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

पुष्टि संप्रदाय - स्वरुप, सांप्क्रय स्रितग, समाधान

***************** ४२ *****************

'सांप्रत स्थिति' .... (चालु) ....

"श्रीमहाप्रभुजीना वास्तववादी विचारोनो परिचय तेमना निबंधना सर्व निर्णय प्रकरणना वचन "स्वधर्माचरणं शक्त्या" थी मले छे. तेमणे प्रवर्तित करेल पुष्टिसंप्रदाय प्रारंभिक अवस्थामां गृहस्थाश्रमनी जवाबदारीओनो त्याग करीने अनुसरवानो नथी परंतु परिवार साथे रही, ज्यां सुधी देहाभिमान होय त्यां सुधी वर्णाश्रभ धर्मने 'स्वधर्म' ना रुपे यथासंभव वहन करवानी आपे आग्या करी छे. वली तेमने स्षटता करी छे के "आजीविका नी अन्य व्यवस्थाना अभावमां एक प्रहर भगवद्सेवा पहोंची त्रण प्रहर शास्त्र संमत व्यावृति करवी. (नि. स.नि.का.२३२).

आपश्रीना विविध ग्रंथोना तलस्पर्शी अभ्यास करतां समजी शकाय छे के आपे मनुष्यजीवन नी जवाबदारीओ तथा मर्यावाओने अनुलक्षीने पुष्टिमार्गने अनुसरवानो जे हेतु छे, ते पार पाडवा माटे सर्वप्रकार नुं मार्गदर्शन आप्यु छे. विशेषतः षोडश ग्रंथो तेमज निबंध (स.नि.प्र.) ना साधन प्रकरणमां आपे स्पष्ट पणे सर्व खुलासा कर्या छे. तदुपरांत तेनी विस्तारपूर्वकनी छणावट श्रीगोपीनाथजीए पोताना 'साधन दीपिका' ग्रंथमां करी छे. भक्तिहंस अने भक्तिहेतु निरणय मां श्रीगुसांईजीए आ संप्रदायना हार्द रुप 'भक्ति' ना कनसेप्टने उजागर कर्यो छे. श्री हरिरायजी ए अनेक लघु ग्रंथोमां श्रीमहाप्रभुजीए निर्देश करेली विभिन्न बाबतोने सरलतापूर्वक समजाव्या छे. आवशयक्ता छे, आपश्रीनी ए आग्याओने साचा परिपेक्षमां समजवानी.

वास्तवमां वर्तमान वल्लभकुल आचार्यश्रीओ पासे अनुयायी वर्गनी ए अपेक्षा रहे के आ मूलचार्योनी गहन वाणी ना मर्मने साचा अर्थमां समजावे. वर्तमानमां तेनी यथार्थता / अयथार्थता अथवा ते प्रस्तुत छे के नहीं तेवो प्रश्न उद्भवी शके नहिं, कारणके सर्वग्य भगवद् स्वरुपो श्रीमहाप्रभजी - श्रीगुसांईजी आदि नी वाणी ने देश-कालनी मर्यादा नडी शके नहीं. तदर्थ तेमना मूलभूत सिद्धांतोमां मां कोइ बांधछोडने अशकाश होई शके ज नहिं. परंतु आपणे जोई शकीए छीए के केटलाक आचार्यश्रीओ वर्तमान युगने अनुलक्षीने श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धांतोना मूलभूत मूल्योनो ह्रांस थाय तेवा उपदेश आपतां होय छे, कदाच एवी भीतिथी के जो एवी छुटछाट न आपवामां आवे तो आजनी युवा पेढी अन्यत्र आकर्षित थई शके छे. क्यांक अन्याश्रय कही शकाय तेवी प्रवृत्तिमां पण तेओनुं योगदान जोई शकाय छे, ते पण कदाच पुष्टिमार्गने संकुचित संप्रदाय न समझी लेवाय, अथवा कोई विशिष्ट व्यक्तिने ने नाराज करवामां कोईक हानी थवानी संभावना होर !.

एक आचार्यश्रीना वचनामृतमां वांचेलुं के "पोताना कुटुंबना पोषण अर्थे द्रव्योपार्जन करवा समाजना अर्थवादने आधिन रहेवुं पडे छे. तेथी आत्मनिष्ठा न होय परंतु केवल साधन के आपद् धर्म तरीके करातो अन्याश्रय, अनन्याश्रयने बाधक नथी". ए विचारणीय छे के ते आचार्यश्रीनी अनन्यता उपर संदेह न करीए छतां तेमना आचरण नो (गर्भित) हेतु लोको समजशे के तेमनी क्रियानुं अनुकरण करवा अनुयायी प्रेराशे ?. शुं अन्याश्रयने आजिविकानुं साधन बनावी शकाय ?

आ बाबते स्पष्ट निर्देश आपना अंतिम वसियतनामा रुप ग्रंथ 'शिक्षाश्लोकी' मां "यदा बहिर्मुखा युयं भविष्यथ कथंचन......." थी आप्यो छे. श्रीहरिरायजीए बहिर्मुखता ना चार लक्षणोमां 'अन्याश्रय' ने गणाव्यो छे. श्रीगुसांईजीना वचन "संबंध गंधोपि कंधरामेव बाधते", अन्याश्रयनी गंभीरता उजागर करे छे. अहिं कोई आदरणिय आचार्यश्रीनी टिका के निंदा करवानो आशय कतई नथी, परंतु वर्तमाननी वास्तविक्ता ने नजरअंदज करी न शकाय ते कहेवानो छे, केमके एवी छुटक-पूटक घटनाओ संप्रदायनी मजबुत नींवने पण हलाववानो प्रयास करी शके छे, जेनी असर जेमनो भाव दृढ थयेल नथी तेना पर करी शके छे. ....क्रमशः .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)